महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University

A State University Established Under Uttar Pradesh State University Act 1973

(Accredited A^{++} by NAAC, CGPA 3.78)

गोरख पथ

त्रैमासिक

ई-पत्रिका

वर्ष-2, अंक-2, जून 2024

प्रकाशक: महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

ई-पत्रिका

वर्ष-2, अंक-2, जून 2024

गोरख पथ

संरक्षक

प्रो. पूनम टंडन

कुलपति

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सम्पादक

डॉ. कुशल नाथ मिश्रा

उप-निदेशक

सह सम्पादक

डॉ. सोनल सिंह

सहायक-निदेशक

डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी

सहायक-ग्रन्थालयी

डॉ. सुनील कुमार

रिसर्च एसोसिएट

संपादन सहयोग

हर्षवर्धन सिंह	वरिष्ठ शोध अध्येता
डॉ. कुँवर रणन्जय सिंह	कनिष्ठ शोध अध्येता
प्रिया सिंह	कनिष्ठ शोध अध्येता

चिन्मयानन्द मल्ल

शुभाकांक्षा

कुलपति

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के स्थापना दिवस के अवसर पर मुझे ई–पत्रिका 'गोरख पथ' के विमोचन का गौरव प्राप्त हुआ था। यह पत्रिका शोधपीठ के यौगिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों का प्रयास, विस्तार एवं विकास को प्रतिबिम्बित करता है। योजना की संकल्पना करने से लेकर सावधानीपूर्वक आदर्शरूप से कार्यान्वित करने तक की पूरी प्रक्रिया रचनात्मकता और अटूट समर्पण के प्रमाण के रूप में स्थापित है। मैं न केवल अनुसंधान को बढ़ावा देने बल्कि सर्वांगीण विकास के पथ पर अग्रसर होने के प्रयासों के लिए शोधपीठ की हार्दिक सराहना करती हूँ। यह शैक्षणिक यात्रा, शोधपीठ के भीतर असाधारण कौशल का एक सच्चा प्रमाण है, निस्संदेह यह ई–पत्रिका शोधपीठ के गतिविधियों से युक्त अत्यधिक उर्जा के साथ जारी रहनी चाहिए। मैं स्थापना दिवस समारोह के दौरान व्यक्त की गई विचारों एवं भावनाओं को प्रतिफलित होते हुए देखने के लिए उत्सुक हूँ। मैं शुभकामनाएं देती हूं कि शोधपीठ निरन्तर प्रगति की ओर बढ़े ।

सम्पादक की कलम से

उप–निदेशक

नाथ पंथ के मुख्य स्तम्भ गोरखनाथ मंदिर के वर्तमान गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा स्थापित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ ने अपनी सार्थक शैक्षणिक उपस्थिति दर्ज कराते हुए भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन एवं ज्ञान परंपरा के क्षेत्र में नाथ पंथ के योगदानों एवं विमर्श को लेकर शैक्षणिक जगत में अनुकरणीय पहल का प्रयास किया है। इस पीठ ने अपने मुख्य उद्देश्यों नाथ दर्शन एवं योग के साधना को लेकर उत्कृष्टता, मौलिकता एवं रचनात्मकता के साथ अपनी गतिविधियों को आगे बढ़ाया है। शोधपीठ आशा करता है कि वर्तमान माननीय कुलपति महोदया के मार्गदर्शन तथा सक्रिय भूमिका से पूरी ताकत से आगे बढ़ें एवं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करे और जिस उद्देश्य के लिए इस शोधपीठ की स्थापना की गयी है उसको प्राप्त करे। ई–पत्रिका 'गोरख पथ' के द्वितीय वर्ष के द्वितीय अंक में अप्रैल से जून 2024 तक शोधपीठ की गतिविधियों को संकलित किया गया है। मैं यह ई–पत्रिका उन सभी विद्वतजनों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो सामान्य रूप से भारतीय ज्ञान परंपरा में और विशेष रूप से नाथ दर्शन में रुचि रखते हैं।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम द्वारा 1957 में आजादी के बाद उत्तर प्रदेश में स्थापित होने वाला पहला विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय ने अपनी लंबी यात्रा में लगातार अपने आदर्श वाक्य, ''आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः'' (सभी दिशाओं से कल्याणकारी विचार मेरे पास आएं) के अनुसार विविध विचारों और विश्वासों को आत्मसात किया। विश्वविद्यालय की भौगोलिक स्थिति 26.7480 डिग्री उत्तर (अक्षांश), 83.3812 डिग्री पूर्व (देशांतर) है। इस विश्वविद्यालय को भगवान बुद्ध, गुरु गोरखनाथ तथा कबीर, बिस्मिल, हनुमान प्रसाद पोद्दार और गीताप्रेस की आध्यात्मिक, दार्शनिक, देशभक्ति और परोपकारी भावना विरासत में मिली है। 190.96 एकड़ में फैले, इस विश्वविद्यालय में 32 विभागों से युक्त सात संकाय हैं, जिन्होंने अपनी स्थापना के बाद से पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार और नेपाल के लोगों को समग्र शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक आवासीय–सह–संबद्ध राज्य विश्वविद्यालय के रूप में, जिसका शैक्षणिक क्षेत्राधिकार पूर्वी उत्तर प्रदेश के तीन जिलों में फैला हुआ है, यह एक समृद्ध शैक्षणिक विरासत अनुभवी, योग्य और समर्पित संकाय सदस्यों, पारदर्शी और प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था, पुस्तकालय, पर्याप्त कैरियर विकास के अवसर, उन्नत अनुसंधान सुविधाएं और एक जीवंत और सुरक्षित परिसर के साथ विकास के पथ पर गतिमान है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

भगवान बुद्ध की उदात्त करुणा, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ की तप–साधना, सन्त–प्रवर कबीर की युगान्तकारी वैचारिकी, द्वारा ही मुख्य रूप से विश्वविद्यालयीय परिक्षेत्र के लोकचित का निर्माण हुआ है। गोरखपुर शहर में नाथपंथ का सर्वोच्च अधिष्ठान– श्रीगोरखनाथ मंदिर स्थित है जो महायोगी श्रीगोरखनाथ की तपोभूमि है और यही पर वे समाधिस्थ हुए। श्रीगोरखनाथ मंदिर को एक सिद्धपीठ होने की मान्यता के साथ–साथ आस्था एवं अर्चना के प्रमुख केन्द्र के रूप में ख्याति है। श्रीगोरक्षपीठ के पूज्य पीठाधीश्वरों ने समरस समाज के निर्माण में, हिन्दू–संस्कृति के पुनरूद्धार में अभूतपूर्व योगदान दिया है। गोरखपुर के बौद्धिक परिवेश में दीर्घकाल से यह अन्तर्भूत भाव प्रवाहमान रहा है कि नाथपंथ के दार्शनिक, सार्वभौमिक सिद्धांतों एवं अनुप्रयोगों को जन–मन तक संचारित करने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन–केन्द्र की स्थापना हो । महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के स्थापना से यही भाव मूर्तरूप लिया है।

उत्तर प्रदेश शासन के उच्च शिक्षा अनुभाग–4 के शासनादेश संख्या–1090 / सत्तर–4–2018–106 (4–शोधपीठ) / 2018, दिनांक 06–08–2018 द्वारा माननीय राज्यपाल के द्वारा दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की स्थापना की गयी।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ का शिलान्यास गोरक्षपीठाधीश्वर महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज, माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश शासन के कर कमलों द्वारा 30 नवंबर 2018 को हुआ। शिलान्यास के इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष प्रो0 धीरेन्द्र पाल सिंह, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति प्रो0 विजय कृष्ण सिंह एवं पूर्व कुलपति प्रो0 राजेश सिंह का सानिध्य प्राप्त हुआ।

3 जनवरी 2023 को मोहन सिंह भवन से शोधपीठ विश्वविद्यालय के महाराणा प्रताप परिसर में निर्मित भवन में स्थानान्तरित हुआ । इस नव निर्मित शोधपीठ का निर्माण उ. प्र. सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा किया गया। इस भवन में पुस्तकालय, संग्रहालय, संगोष्ठी एवं सम्मेलन कक्ष, दृश्य–श्रव्य कक्ष, प्रकाशन हेतु संगणक कक्ष, अतिथि गृह के साथ साथ शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर पदधारको के अतिरिक्त सामान्य प्रशासन कार्यालय की भी व्यवस्था है। महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के इस नवीन भवन में 13 जनवरी 2023 को नैक पियर टीम का विश्वविद्यालय के मूल्यांकन हेतु आगमन एवं निरीक्षण हो चुका है । इस नैक पियर टीम के मूल्यांकन में विश्वविद्यालय को A++ ग्रेड प्राप्त हुआ है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की स्थापना का उद्देश्य यत्र–तत्र विकीर्ण मन्तव्यों एवं उपदेशों को समेकित कर विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करना है। गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थापित यह शोध–संस्थान जिज्ञासुओं की तात्विक–चिन्तन में अभिवृद्धि के साथ–साथ सामाजिक समरसता का संदेश भी संचारित कर रहा है।

विशेष विभागीय बैठक

महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ में उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र द्वारा गुरुवार 2 अप्रैल 2024 को शोधपीठ में एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में डॉ. कुशलनाथ मिश्र, डॉ. सोनल सिंह, डा0 मनोज कुमार द्विवेदी, डॉ. सुनील कुमार, हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुँवर रणन्जय सिंह, प्रिया सिंह तथा चिन्मयानन्द मल्ल उपस्थित रहे। बैठक में निम्नलिखित बिन्दूओं पर चर्चा की गई जिसमें इस बात पर निर्णय लिया गया कि "गोरखबानी" में आगत शब्दों की हिन्दी वर्णमाला के आधार पर एक सूची तैयार की जाये। इसमें डॉ. कुँवर रणंजय सिंह को स्वर (अ से अः तक) का कार्य दिया गया। डॉ. सुनील कुमार को "क" से "ण" वर्ण तक का कार्य दिया गया। प्रिया सिंह को "त" से "म" वर्ण तक का कार्य दिया गया। हर्षवर्धन सिंह को "य" से "ज्ञ" वर्ण तक का कार्य दिया गया। यह कार्य शुक्रवार 05/04/2024 को दोपहर 3 बजे तक पूर्ण करके दिया जाना है। यह तय किया गया कि 09/04/2024 को शोध अध्येताओं द्वारा विभागीय व्याख्यान के द्वितीय चरण के द्वितीय व्याख्यान का आयोजन डॉ. सुनील कुमार करेंगे। त्रैमासिक पत्रिका "गोरख पथ" (अप्रैल से जून 2024) का कार्य शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण करके उसे समय से प्रकाशित किया जाये। शोध अध्येताओं द्वारा विभागीय व्याख्यान के द्वितीय चरण की तृतीय व्याख्यान का आयोजन अप्रैल माह के अन्तिम सप्ताह में किया जाय।

नाथपंथ विश्वकोश निर्माण हेतु विशेष बैठक

महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा "नाथपंथ विश्वकोश" निर्माण की योजना एवं क्रियान्वयन हेतु 6 अप्रैल 2024 को महत्त्वपूर्ण बैठक आयोजित की गयी। यह बैठक प्रो० पूनम टंडन, कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अध्यक्षता में की गयी। इस बैठक में प्रो० सदानंद गुप्ता, पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, प्रो० संतोष कुमार शुक्ल, प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली, डॉ. रंगनाथ त्रिपाठी, श्रीगोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ, गोरखपुर, डॉ. प्रांगेश मिश्र, श्रीगोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ, गोरखपुर, डॉ. कुशल नाथ मिश्र, उप निदेशक, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, गोरखपुर, डॉ. महेंद्र कुमार सिंह, निदेशक, सूचना, प्रकाशन एवं जनसम्पर्क केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर उपस्थित रहे। इस बैठक में प्रो० सदानंद गुप्ता, प्रो० संतोष कुमार शुक्ल ने विश्वकोश के क्रियान्वयन एवं योजना हेतु अपने सुझाव एवं रूपरेखा प्रस्तुत किया। इस बैठक में यह तय हुआ कि नाथ पंथ विश्वकोश के निर्माण हेतु एक सलाहकार समिति बनाई जाएगी। साथ ही विद्वानों की सूची तैयार की जाएगी। यह विश्वकोश हिन्दी भाषा में तैयार किया जाएगा, बाद में इसका अनुवाद अन्य भाषाओं में किया जाएगा। वर्णमाला के क्रम में परिभाषित शब्दों का संकलन किया जाएगा। यह विश्वकोश कई खंडों में तैयार किया जाएगा।

प्राण की नाथ यौगिक अवधारणा पर विशिष्ट व्याख्यान

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में 9 अप्रैल 2024 को एक विशिष्ट व्याख्यान विषय 'प्राण की नाथ यौगिक अवधारणा' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र के द्वारा किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार रहे। विशिष्ट व्याख्यान के वक्ता डॉ. सुनील कुमार ने प्राण की नाथ यौगिक अवधारणा पर विस्तार से समझाते हुए प्राण के विविध स्वरूपों पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्राण को आधुनिक विज्ञान के संदर्भ में व्याख्यायित किया। डॉ. सुनील ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्राण प्रकृति एवं शरीर के सभी ऊर्जाओं का मूल है। प्राण अति सूक्ष्म है। प्राण से ही सभी शक्तियों की उत्पत्ति होती है। प्राण शरीर में नाड़ियों के माध्यम से प्रवाहित होता है। इन नाड़ियों का नियंत्रण नाड़ियों के जाल एवं केंद्र स्वरूप चक्रों के माध्यम से होता है। उन्होंने प्राण के नियमन की चर्चा करते हुए कहा कि प्राण के नियंत्रण से प्रकृति की सभी शक्तियों पर नियंत्रण किया जा सकता है। श्वसन क्रिया शरीर में प्राण की सरलतम अभिव्यक्ति है। प्राण के नियमन का सबसे आसान तरीका श्वसन प्रक्रिया का नियंत्रण करना है। इसी को प्राणायाम, बंध एवं मुद्राओं के माध्यम से साधा जाता है। उन्होंने नाथ योगियों के योगदानों के बारें में बताते हुए कहा कि नाथ योगियों ने प्राण के ऊपर महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इस व्याख्यान में श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह, सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, चिन्मयानंद मल्ल, शोध अध्येता डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, रणजीत कुमार गुप्ता, मोनिका रावत, नीतू जायसवाल, सुघोष मिश्र, अन्य विभागों के शोध छात्र एवं परास्नातक कक्षाओं के छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

कार्यशाला 'धरोहर संकल्प : भारतीय संस्कृति और विरासत का वैभव' में व्याख्यान

विश्व धरोहर दिवस 18 अप्रैल के अवसर पर राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश एवं दीप्तिमान संस्कृति फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय विरासती प्रदर्शनी एवं कार्यशाला विषय 'धरोहर संकल्प : भारतीय संस्कृति और विरासत का वैभव' का आयोजन महात्मा गांधी इंटर कॉलेज में किया गया। इस कार्यक्रम में महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र ने अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने प्रदर्शनी एवं कार्यशाला के माध्यम से पुरातात्विक धरोहरों को संरक्षित करने पर जोर दिया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि इस तरह के कार्यक्रम के आयोजन से भारतीय संस्कृति के धरोहरों के प्रति चेतना जागृत करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

ई-पत्रिका 'गोरख पथ' के दूसरे अंक का माननीय कुलपति के द्वारा विमोचन

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की त्रैमासिक ई–पत्रिका गोरख पथ के द्वितीय वर्ष के पहले अंक का विमोचन प्रो. पूनम टंडन, मा. कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के द्वारा दिनांक 2 मई 2024 को हुआ। कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने पिछले वर्ष से लगातार प्रकाशित हो रही इस पत्रिका के डिजाइन एवं कंटेन्ट की सराहना करते हुए कहा कि शोधपीठ की गतिविधियां समाज के लिए प्रेरक होनी चाहिए। शोधपीठ के शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों से युक्त यह पत्रिका नियमित रूप से विश्वविद्यालय एवं शोधपीठ के आधिकारिक वेबसाइट पर प्रकाशित किया जाता है। इस पत्रिका के प्रथम अंक का लोकार्पण उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी महाराज, पीठाधीश्वर, गोरखनाथ मन्दिर के द्वारा किया गया था। इस अवसर पर ई–पत्रिका के सम्पादक महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र, सह सम्पादक शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह, सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार एवं सम्पादन सहयोगी शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह उपस्थित रहे।

भारतीय ज्ञान परंपरा व्याख्यान श्रृंखला- 3

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत ऑनलाइन व्याख्यान 'भारतीय ज्ञान परंपराः नाथ योग' विषय पर दिनांक 4 मई 2024 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ कार्यक्रम समन्वयक डॉ. कुशलनाथ मिश्र के द्वारा मुख्य वक्ता के सामान्य परिचय एवं प्रस्ताविकी के साथ किया गया। इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन विभाग से प्रो. संतोष कुमार शुक्ल रहे।

प्रो. संतोष कुमार शुक्ल ने भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में नाथ योग के विविध पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने गोरखबानी एवं गोरखनाथ के संस्कृत साहित्य के आधार पर नाथ योग के तत्वों को व्याख्यायित किया। प्रो. शुक्ल ने बताया कि नाथ योग साधना का मार्ग है। उन्होंने मुक्ति की चर्चा करते हुए कहा कि नाथ योग का चरम लक्ष्य अलख निरंजन है। मन की स्थिरता के बिना मोक्ष नहीं हो सकता। अमनस्क होने पर ही हम संबोध व अलख निरंजन को सिद्ध कर सकते हैं। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि शरीर शुद्धि महत्त्वपूर्ण है। इससे प्राणायाम की तीव्रता बढ़ती है, जिस कारण बिंदु उर्ध्वकर्षण हो पाता है। उन्होंने योगियों के जीवन लक्षण के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि चार प्रकार के योगियों के बारे में नाथ संप्रदाय में संदर्भ मिलते हैं– आरंभ योगी, घट योगी, परिचय योगी तथा निष्पत्ति योगी। उन्होंने प्रत्येक योगी के आचार व विचार के बारें विस्तार से चर्चा किया।

इस आनलाइन व्याख्यान में कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह आदि उपस्थित रहे। नेपाल से प्रो. भागवत ढकाल, डा. सुधाने के साथ ही विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के आचार्य सहित डॉ. लक्ष्मी मिश्र, डॉ. आमोद राय, डॉ. कुलदीपक शुक्ल, डॉ. रंजन लता, सुधीर तिवारी आदि जुड़े रहे।

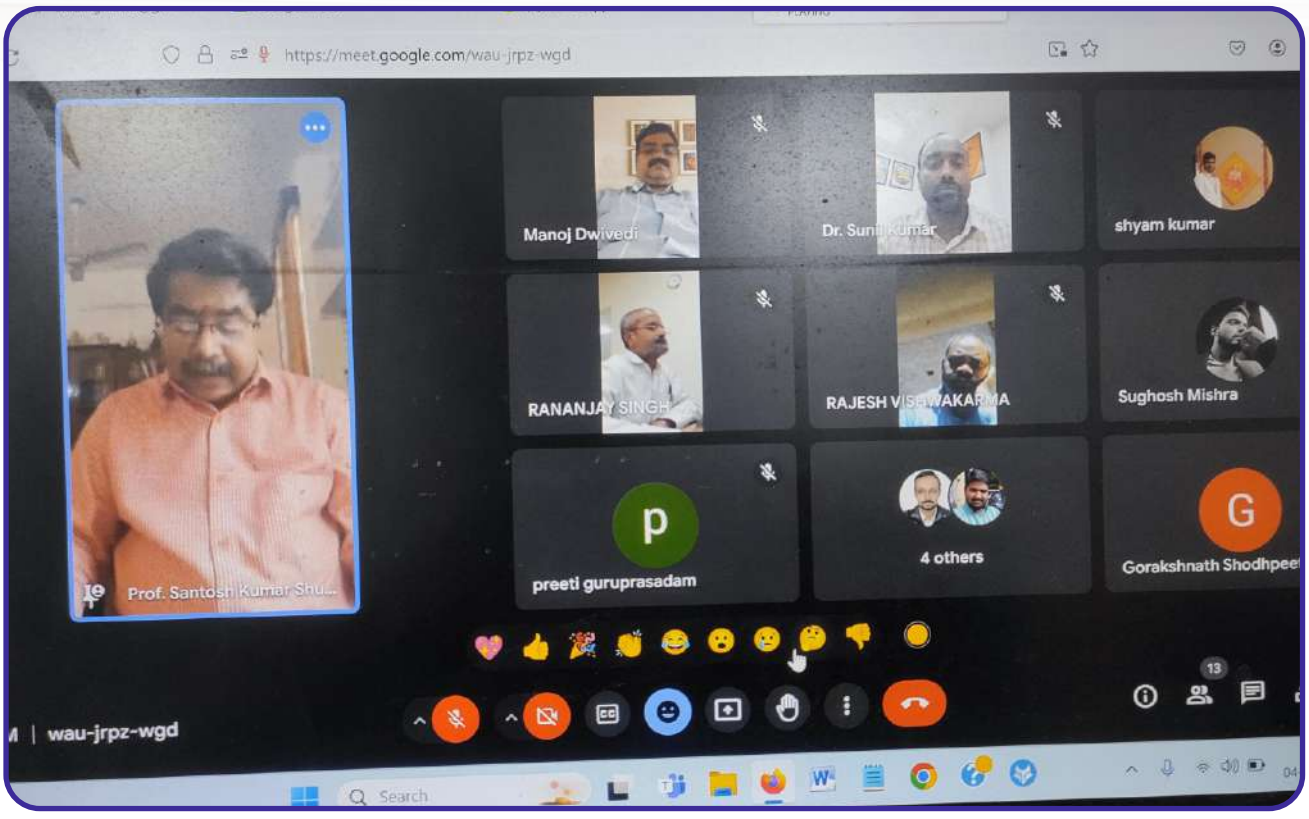

योग कार्यशाला 'योग एवं आजीविका'

कार्यशाला का परिचय

भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग के रूप में योग का अस्तित्व प्राचीन काल से रहा है, यह प्राचीन ज्ञान, जो मन और शरीर के बीच सामंजस्य लाता है, वह आज की पहचान बन गयी है। पिछले कुछ दशकों में, योग अधिक लोकप्रिय हो गया है और भारत के साथ–साथ विदेशों में भी बड़ी संख्या में लोगों ने इसे जीवन शैली के रूप में अपनाया है। 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में 36,000 भारतीय योग कक्षा में शामिल हुए तथा 2015 से अनवरत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो रहा है, इसके द्वारा प्राप्त परिणाम जैसे शान्ति, फिटनेस और लचीलेपन, ने लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है जहाँ लोगों ने इसे अपने दैनिक जीवन का अंग बनाया वहीं व्यवसाय के रूप में इसका चलन तेजी से बढ़ा, व्यक्ति अब आर्युवेद, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी चिकित्सा, होम्योपैथी, पंचकर्म, हठयोग इत्यादि को अपने दैनिक जीवन का अंग बना रहे है तथा इससे अपनी आजीविका में भी सुधार कर रहे है। योग एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अपार संभावनायें हैं, जिसे व्यक्तिगत तौर पर अपने जीवन में शामिल कर अपने जीवन के साथ –साथ अन्य लोगों के जीवन को भी सुखी बनाया जा सकता है, इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये कार्यशाला के विषय चयन किया गया है ।

कार्यशाला का सत्र

कार्यशाला 'योग एवं आजीविका' में दो सत्र संचालित किया गया– 1.योग प्रशिक्षण, 2. योग पर व्याख्यान। जिससे प्रतिभागियों को योग के व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ–साथ सैद्धान्तिक पक्ष की जानकारी दी गयी।

कार्यक्रम विवरण

योग प्रशिक्षण

डॉ. विनय कुमार मल्ल	प्रतिदिन	09:00–10:00

व्याख्यान

क्र.	दिनांक	वक्ता	विषय	समय	
1.	09–05–2024	प्रो. आर.डी.राय	योग की उत्पति एवं विकास	10:00	
2.	10–05–2024	प्रो. अलका पाण्डेय	योग एवं अध्यात्म	4:00	ऑनलाईन
3.	11–05–2024	प्रो. एच.के.सिंह	योग एवं व्यवसाय	12:00	
4.	12–05–2024	प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी	योग एवं अध्यापन	3:00	
5.	13–05–2024	डा. प्राङ्गेश मिश्रा	योग एवं शोध	3:00	
6.	14–05–2024	प्रो. द्वारका नाथ	योग एवं आजीविका	1:00	
7.	15–05–2024	प्रो. डी.के.सिंह	योग एवं मानव जीवन	10:00	

संरक्षक
प्रो. पूनम टंडन (मा. कुलपति)
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

संयोजक
डॉ. कुशल नाथ मिश्र
उपनिदेशक, श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

सह-संयोजक
डॉ. सोनल सिंह
सहा. निदेशक, श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

सह-संयोजक
डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी
सहा. ग्रन्थालयी, श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

संयोजक मण्डल
डॉ. सुनील कुमार (रिसर्च एसोसिएट), **हर्षवर्धन सिंह** (एस. आर. एफ),
डॉ. कुवर रणंजय सिंह (जे. आर. एफ), प्रिया सिंह (जे. आर. एफ), चिन्मयानन्द मल्ल (कैटलॉगर)

कार्यशाला प्रथम व्याख्यान 'योग का उद्भव एवं विकास' उद्घाटन सत्र

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में दिनांक 9 मई 2024 को सप्तदिवसीय ग्रीष्मकालीन योग कार्यशाला विषय 'योग एवं आजीविका' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के कृतकार्य आचार्य एव पूर्व अधिष्ठाता छात्र कल्याण, प्रो. राम दरश राय एवं शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र द्वारा गुरु गोरक्षनाथ के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र के द्वारा एक प्रस्ताविकी एवं स्वागत के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता प्रो. राम दरश राय ने योग की उत्पत्ति एवं विकास विषय पर व्याख्यान दिया। प्रो. राय ने योग के उद्भव एवं विकास पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि योग का उद्भव सृष्टि के उद्भव के समय ही हुआ है। योग पर जितना चिंतन किया गया है उतना किसी अन्य विषय पर नहीं हुआ। वर्तमान समय में योग विद्या के महत्त्व पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि योग ज्ञान की सबसे बड़ी एवं श्रेष्ठ विद्या है। योग ऐसा क्षेत्र है, जो प्रत्येक विधा में है तथा प्रत्येक विधा के साथ जुड़ जाता है। अतः योग को प्रत्येक क्षेत्र के साथ जोड़ने की जरूरत है। उन्होंने योग के तीन मार्गों– विहंगम, पिपीलिका तथा मंडूक मार्ग पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस कार्यशाला में योग प्रशिक्षण का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। योग प्रशिक्षण योग प्रशिक्षक डॉ. विनय कुमार मल्ल के द्वारा दिया गया। योग प्रशिक्षण में लगभग 70 लोगों ने भाग लिया। जिसमें स्नातक, परास्नातक, शोध छात्र आदि विद्यार्थी एवं विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक सहित अन्य लोग सम्मिलित हुए। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के ग्रंथालयी डॉ. विभाष कुमार मिश्र, डॉ. आमोद कुमार राय आदि शिक्षकों सहित शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार तथा शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह उपस्थित रहे। गोरक्षनाथ शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मंच का संचालन एवं सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी द्वारा मुख्य वक्ता सहित समस्त श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

कार्यशाला द्वितीय व्याख्यान 'योग एवं अध्यात्म'

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय ग्रीष्मकालीन योग कार्यशाला विषय 'योग एवं आजीविका' दिनांक 10 मई को योग प्रशिक्षण के दूसरे दिन भी प्रतिभागियों की काफी संख्या रही। योग प्रशिक्षण में लगभग 75 लोगों ने भाग लिया। जिसमे एन. एस. एस., योग एवं स्नातक, परास्नातक, शोध छात्र आदि विद्यार्थी एवं अन्य लोग सम्मिलित हुए।

सायं 3 बजे आनलाइन माध्यम से योग एवं अध्यात्म विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र जी के द्वारा हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. अलका पांडेय, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ रहे। उन्होंने योग पर अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज के समय में योग की अत्यधिक आवश्यकता है। क्योंकि हमारी युवा पीढ़ी अवसाद ग्रस्त हो रही हैं। प्रो. पाण्डेय ने योग के ज्ञानकाण्ड, उपासना काण्ड, कर्मकाण्ड पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने निष्काम कर्म की चर्चा करते हुए कहा कि उपासना का प्राण भक्ति है और उसका कलेवर योग है। भक्ति से हीन योग कसरत मात्र है। अतः योग से भक्ति को भी जोड़ना है। प्रो. अलका ने योग के चार साधनों – मंत्र, लय, हठ व राजयोग को विस्तृत रुप से व्याख्यायित किया। इस कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल आदि उपस्थित रहे। विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के साथ ही विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के आचार्य सहित डॉ. कुलदीपक शुक्ल, डॉ. श्रीनिवास मिश्र, प्रिया सिंह आदि जुड़े रहे।

कार्यशाला तृतीय व्याख्यान 'योग एवं व्यवसाय'

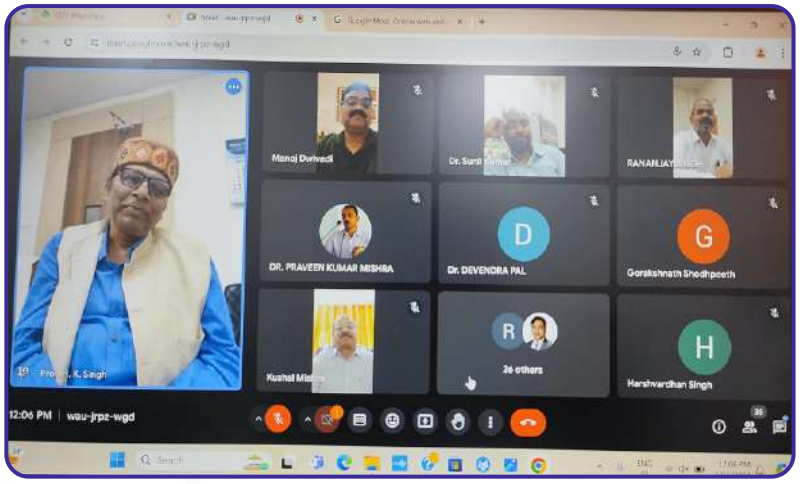

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय ग्रीष्मकालीन योग कार्यशाला विषय 'योग एवं आजीविका' दिनांक 11 मई को योग प्रशिक्षण के तीसरे दिन भी प्रतिभागियों की काफी संख्या रही। योग प्रशिक्षण डा. विनय कुमार मल्ल के द्वारा दिया गया। योग प्रशिक्षण में लगभग 70 लोगों ने भाग लिया। जिसमे स्नातक, परास्नातक आदि के विद्यार्थी एवं अन्य लोग सम्मिलित हुए। दोपहर 12 बजे आनलाइन माध्यम से योग एवं व्यवसाय विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र जी के द्वारा हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. हरेन्द्र कुमार सिंह, अधिष्ठाता, वाणिज्य संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी रहे। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि व्यवसाय का लक्ष्य है उचित लाभ अर्जित करना तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना। योग एवं व्यवसाय दोनों में सहकारिता होनी चाहिए। योग के व्यवसायीकरण में स्वामी रामदेव का महत्त्वपूर्ण योगदान है। प्रो. सिंह ने महात्मा गांधी की चर्चा करते हुए कहा कि साध्य और साधन दोनों में सुचिता होनी चाहिए। इस कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल आदि उपस्थित रहे। विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के साथ ही विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के आचार्य सहित डॉ. देवेन्द्र पाल, डॉ. श्रीनिवास मिश्र आदि जुड़े रहे।

कार्यशाला चतुर्थ व्याख्यान 'योग एवं अध्यापन'

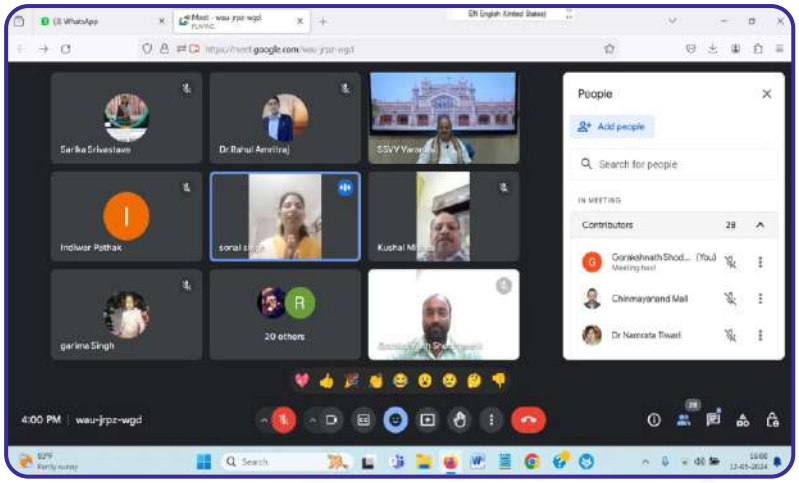

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय ग्रीष्मकालीन योग कार्यशाला विषय 'योग एवं आजीविका' दिनांक 12 मई को योग प्रशिक्षण के चौथे दिन भी प्रतिभागियों की काफी संख्या रही। योग प्रशिक्षण डा. विनय कुमार मल्ल के द्वारा दिया गया। उन्होंने चक्रासन, शीर्षासन, हलासन समेत जलनेति आदि का प्रशिक्षण देते हुए उसके लाभों से अवगत कराया। योग प्रशिक्षण में लगभग 65 लोगों ने भाग लिया। जिसमे स्नातक, परास्नातक आदि के विद्यार्थी एवं अन्य लोग सम्मिलित हुए।

सायं 3 बजे आनलाइन माध्यम से योग एवं अध्यापन विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र जी के द्वारा हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी, संस्कृत विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी रहे। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि योग बहुत व्यापक है। गोरखनाथ की गोरखबानी भारत में सर्वत्र गूँजती है। यही से भारत में योग का व्यापक प्रादुर्भाव है। योग कर्म की कुशलता है। एक–एक कर्म को हमें समझकर करना चाहिए। प्रो. अधिकारी ने योग, आजीविका एवं अध्यापन के सम्बन्धों को जोड़ते हुए कहा कि योग चित्त की स्थिरता प्रदान करता है। चित्त स्थिरता से ही अध्यापन होता है। आजीविका खोजना नहीं पड़ता है, वह स्वयं खोजते खोजते चली आएगी।

इस आनलाइन व्याख्यान में कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के साथ ही विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के आचार्य सहित शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, डॉ. प्रांगेश मिश्र एवं शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल आदि जुड़े रहे।

कार्यशाला पंचम व्याख्यान 'योग एवं शोध'

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय ग्रीष्मकालीन योग कार्यशाला विषय 'योग एवं आजीविका' दिनांक 13 मई को योग प्रशिक्षण के पाँचवे दिन भी प्रतिभागियों की काफी संख्या रही। योग प्रशिक्षण डा. विनय कुमार मल्ल के द्वारा दिया गया। योग प्रशिक्षण में लगभग 60 लोगों ने भाग लिया। जिसमें स्नातक, परास्नातक आदि के विद्यार्थी एवं अन्य लोग सम्मिलित हुए। सायं 3 बजे ऑनलाइन माध्यम से योग एवं शोध विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र जी के द्वारा हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. प्रांगेश मिश्र, गुरु श्रीगोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ, गोरखपुर रहे। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि योग विद्या अनादि है। योग विद्या ईश्वर द्वारा प्रवर्तित है। यह निरंतर चली आ रही है। गीता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि कर्म की कुशलता को योग कहा जाता है। उन्होंने हठयोग के 6 अंगों पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल आदि उपस्थित रहे। विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के साथ ही विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के आचार्य सहित प्रिया सिंह आदि जुड़े रहे।

कार्यशाला षष्ठम व्याख्यान 'योग एवं आजीविका'

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय ग्रीष्मकालीन योग कार्यशाला विषय 'योग एवं आजीविका' दिनांक 14 मई को योग प्रशिक्षण के छठवें दिन भी प्रतिभागियों की काफी संख्या रही। योग प्रशिक्षण डा. विनय कुमार मल्ल के द्वारा दिया गया। योग प्रशिक्षण में लगभग 55 लोगों ने भाग लिया। जिसमे स्नातक, परास्नातक आदि के विद्यार्थी एवं अन्य लोग सम्मिलित हुए। अपरान्ह 1 बजे आनलाइन माध्यम से योग एवं आजीविका विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र जी के द्वारा हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. द्वारका नाथ, दर्शन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर रहे। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि योग कोई पंथ या संप्रदाय नहीं है। योग महाविज्ञान है। योग के द्वारा जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। योग पूरे भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है । योग का जननी भारत है। योग अनेक प्रक्रियाओं का संकलन है। जिसमे मन व शरीर में सामंजस्य स्थापित कर मोक्ष प्राप्त करते है। योग को केवल एक्सरसाइज के रूप में नहीं लेना चाहिए। योग का संबंध शरीर, मन व आत्मा तीनों से है। उन्होंने योग पर गीता के व्याख्या पर भी विस्तार से चर्चा करते हुए कर्म योग पर प्रकाश डाला। इस आनलाइन व्याख्यान में कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल आदि उपस्थित रहे। विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के साथ ही विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के आचार्य सहित डॉ. संजय तिवारी, प्रिया सिंह आदि जुड़े रहे।

कार्यशाला सप्तम व्याख्यान 'योग एवं मानव जीवन' समापन सत्र

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टण्डन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय ग्रीष्मकालीन कार्यशाला 'योग एवं आजीविका' सातवें एवं अंतिम दिन दिनांक 15 मई को सम्पन्न हो गया। कार्यशाला के इस अंतिम दिन भी सुबह डा. विनय कुमार मल्ल के द्वारा योग प्रशिक्षण दिया गया। उसके बाद 10 बजे मुख्य वक्ता प्राणि विज्ञान के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार सिंह द्वारा योग एवं मानव जीवन विषय पर व्याख्यान दिया गया। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि मानव जीवन के तीन आयाम है शरीर, मन एवं आत्मा। इन तीनों से योग जुड़ा हुआ है। जब तक वैचारिक शुद्धता नहीं होगी तब तक कोई किसी को योग नहीं सिखा सकता। उन्होंने यम एवं नियम के महत्त्व पर विशेष जोर दिया। समापन समारोह का शुभारम्भ माननीया कुलपति प्रो. पूनम टंडन के द्वारा गुरु गोरक्षनाथ के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। इसके बाद माननीय कुलपति प्रो. पूनम टंडन एवं अधिष्ठाता, छात्र कल्याण प्रो. अनुभूति दुबे के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र जी द्वारा कार्यशाला का विवरण प्रस्तुत किया गया। योग के बच्चों द्वारा योगासनों की मनमोहक प्रस्तुति की गई। प्रो. अनुभूति दुबे ने बच्चों के प्रयास की सराहना की। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि योग केवल क्रिया नहीं है बल्कि एक साधना है। पूरे विश्व में योग को मान्यता दी गयी है। उन्होंने घोषणा किया कि आगामी 21 जून को विश्वविद्यालय में योग दिवस भव्य तरीके से मनाया जाएगा। इस बार विश्वविद्यालय के तरफ से योग दिवस का थीम योगा फॉर वुमन होगा। मंच का संचालन शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न शिक्षकों सहित प्रो. हिमांशु पांडेय, डॉ. विभाष मिश्र, डॉ. फूल चंद गुप्ता, डॉ. दुर्गेश पाल, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डॉ. रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल आदि एवं छात्र–छात्रायें उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन विनय मल्ल द्वारा किया गया। इस कार्यशाला के साथ ही कार्यशाला सहभागिता का प्रमाण पत्र का वितरण भी किया गया।

जनपद स्तरीय योगासन खेल प्रतियोगिता का आयोजन

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में योग कार्यशाला के साथ ही द्वितीय जनपद स्तरीय योगासन प्रतियोगिता का आयोजन भी डिस्ट्रिक्ट योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन, गोरखपुर के तत्वाधान में किया गया। प्रतियोगिता दो दिनों तक चला। इस योगासन प्रतियोगिता का उद्घाटन 13 अप्रैल को 10 बजे डॉ. कुशल नाथ मिश्र, उप निदेशक, महायोगी गुरू श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ, मुख्य अतिथि रमेंद्र कुमार सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, गोरखपुर तथा विशिष्ट अतिथि अभिषेक कुमार पांडेय, प्राचार्य, जिला शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान, गोरखपुर, विवेक जायसवाल, जिला समन्वयक, समग्र शिक्षा, गोरखपुर, राजू कुमार जायसवाल, चेयरमैन, जी. डी. गोयनका पब्लिक स्कूल, गोरखपुर, डा. विनय मल्ल के उपस्थिति में किया गया। इस प्रतियोगियता में विभिन्न प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला के समापन समारोह के साथ योगासन के विभिन्न वर्गों के विजेताओं को माननीय कुलपति जी के द्वारा पुरस्कृत किया गया। विश्वविद्यालय के योग अध्ययन केंद्र के विद्यार्थी मोनिका रावत, सुनीता कुमारी एवं अविनाश कुमार मद्धेशिया ने पुरस्कार जीते।

योगासन खेल प्रतियोगिता में विभिन्न वर्गो में प्रथम स्थान प्राप्त रामजी एवं अन्य विद्यार्थी

योग कार्यशाला के प्रतिभागी प्रमाण–पत्र प्राप्त करते हुए

योग अध्ययन एवं अभ्यास केन्द्र, दी. द. उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय के विद्यार्थी एवं गेस्ट फैकल्टी

बच्चों द्वारा प्रस्तुत रंगारंग कार्यक्रम

योगासन खेल प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते विद्यार्थी

नाथ पंथ के प्रवर्तक गुरु गोरखनाथ पर विभागीय पत्र प्रस्तुति

व्याख्यान श्रृंखला के द्वितीय चरण की अंतिम कड़ी में दिनांक 18 मई 2024 को शोधपीठ के शोध अध्येता प्रिया सिंह ने नाथ पंथ के प्रवर्तक गुरु गोरखनाथ विषय पर अपना पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में बताया कि गोरखनाथ ने योग को नाथपंथ के रूप में एक संस्थागत वैचारिक अभियान का स्वरूप दिया। गोरखनाथ भारत के समाजिक–धार्मिक इतिहास में एक युग प्रवर्तक व्यक्तित्व हैं। उन्होंने गोरखनाथ के विभिन्न योगदानों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत शोधपीठ के उप निदेशक डॉ0 कुशल नाथ मिश्र के परिचयात्मक उद्बोधन से हुई। इस अवसर पर सहायक निदेशक डॉ0 सोनल सिंह डॉ0 मनोज द्विवेदी, डॉ0 सुनील कुमार, हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल आदि उपस्थित रहे।

भारतीय ज्ञान परम्परा एवं नाथ पंथ पर विभागीय पत्र प्रस्तुति

व्याख्यान श्रृंखला के द्वितीय चरण की अंतिम कड़ी में 25 मई 2024 को शोधपीठ के शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह ने भारतीय ज्ञान परम्परा एवं नाथ पंथ विषय पर अपना पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में बताया कि भारत की ज्ञान परम्परा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। संसार के सर्वोत्तम दार्शनिक सिद्धान्तों को यहाँ की ज्ञान परम्परा ने खोजा था। भारतीय मूल की सभी आगम–निगम, वैदिक–अवैदिक, साधना–परंपराओं में न्यूनाधिक रूप में अथवा किसी न किसी रूप में योग की स्वीकृति और देशना निरंतर मिलती है। एक संपूर्ण विद्या के रूप में योग साधना की दो समानांतर धाराएं पतंजलि द्वारा प्रवर्तित पतंजलि योग दर्शन एवं महायोगी गुरु श्रीगोरखनाथ द्वारा प्रतिस्थापित नाथ योग क्रियात्मक योग है। उन्होंने नाथ पंथ के विभिन्न योगदानों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत शोधपीठ के उप निदेशक डॉ0 कुशल नाथ मिश्र के परिचयात्मक उद्बोधन से हुई। इस अवसर पर सहायक निदेशक डॉ0 सोनल सिंह डॉ0 मनोज द्विवेदी, डॉ0 सुनील कुमार, प्रिया सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल, आदि उपस्थित रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधरोपण का आयोजन

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 5 जून 2024 को दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के द्वारा महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ एवं जिला वन विभाग तथा गोरखपुरिया भोजपुरिया के सहयोग से महाराणा प्रताप परिसर में पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने हेतु कुलपति प्रो. पूनम टंडन के द्वारा पौधरोपण किया गया। महाराणा प्रताप परिसर स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में इस अवसर पर माननीय कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में एक पर्यावरण जागरूकता सह संवाद कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। इस कार्यक्रम में कुलपति ने कहा कि मानव और पर्यावरण एक दूसरे के पूरक हैं। आने वाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण को अनुकूल बनाने में हर व्यक्ति को अपने आसपास एक वृक्ष अवश्य लगाना चाहिए। पौधरोपण द्वारा ही प्रदूषित पर्यावरण से समाज को बचाया जा सकता है। उन्होंने वृक्षों के रखरखाव पर जोर देते हुए वृक्षों के संरक्षण की आवश्यकता बताई। इस अवसर पर घटते पेड़ एवं बढ़ते प्रदूषण के प्रति जागरूक किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को पौधरोपण के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर अधिष्ठाता, छात्र कल्याण प्रो. अनुभूति दुबे, शोधपीठ के उपनिदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र, अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय, प्रो. सरिता पाण्डेय, डॉ. विभाष मिश्र, डॉ. महेंद्र सिंह, डा. अमित उपाध्याय, दीपेंद्र मोहन सिंह, जिला वन अधिकारी विकास यादव, गोरखपुरिया भोजपुरिया के विकास श्रीवास्तव, नरेंद्र मिश्र, सहायक ग्रंथालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल आदि बड़ी संख्या में शिक्षक उपस्थित रहे।

नाथपंथ विश्वकोश सम्बन्धी बैठक

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में नाथपंथ विश्वकोश के योजना एवं क्रियान्वयन हेतु 14 जून 2024 को बैठक आयोजित की गयी। यह बैठक प्रो० सदानंद गुप्ता, पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के अध्यक्षता में की गयी। इस बैठक में डॉ. प्रदीप राव, कुलसचिव, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर, शोधपीठ के उप निदेशक, डॉ. कुशल नाथ मिश्र, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार, हर्षवर्धन सिंह उपस्थित रहे। इस बैठक में प्रो० सदानंद गुप्ता, डॉ. प्रदीप राव ने विश्वकोश के क्रियान्वयन एवं योजना हेतु अपने सुझाव एवं रूपरेखा प्रस्तुत किया। साथ ही विद्वानों की सूची तैयार की गयी। वर्णमाला के क्रम में परिभाषित शब्दों का संकलन प्रस्तुत किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर साप्ताहिक योग कार्यक्रम का शुभारम्भ

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2024 के अंतर्गत साप्ताहिक योग कार्यक्रम का शुभारम्भ 15 जून को माननीय कुलपति प्रो. पूनम टंडन के द्वारा तारामंडल के नौका विहार स्थित वाटर स्पोर्ट कॉम्प्लेक्स के परिसर में सुबह 6 बजे हुआ। इस वर्ष विश्व योग दिवस की थीम 'योग फॉर सेल्फ एंड सोसाइटी' यानी स्वयं और समाज के लिए योग शासन के द्वारा निर्धारित किया गया है। कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने इस थीम के अनुरूप इस योग सप्ताह के कार्यक्रम का शुभारंभ पूरे समाज को संदेश देने हेतु एवं लोगों को प्रेरित करने के लिए गोरखपुर के लोगों के सम्मिलन के केंद्र नौका विहार के निकट किया। उन्होंने सैकड़ों लोगों के साथ योगाभ्यास कर जनता को निरोग रहने का संदेश दिया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि योग के माध्यम से स्वयं एवं समाज के शारीरिक–मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा कर उनका सशक्तिकरण किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सभी लोगों को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना है। इस कार्यक्रम के द्वारा जनमानस को स्वास्थ्य लाभ पहुचाने के उद्देश्य से लोगों को योग का संदेश दिया गया। इस योगाभ्यास में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. शांतनु रस्तोगी, अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, प्रो. अनुभूति दुबे, शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र, क्रीड़ा परिषद के अध्यक्ष, प्रो. विमलेश मिश्र, मुख्य नियंता प्रो. सतीश पाण्डेय, प्रो. श्रीनिवास मणि त्रिपाठी, डॉ. आमोद राय, डॉ. ओ. पी. सिंह, डॉ. अमित कुमार उपाध्याय, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, शिक्षक गण, अधिकारी गण, विद्यार्थी तथा शहर के नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। इस साप्ताहिक योग कार्यक्रम के अंतर्गत 10 बजे महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से योगाभ्यास कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इसमें मधुमेह रोगियों के लिए योगासन एवं प्राणायाम पर डॉ. प्रफुल्ल चंद द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में मधुमेह से ग्रस्त रोगियों के लिए योगाभ्यास के तरीके सिखाए गए।

साप्ताहिक योग कार्यक्रम के दूसरे दिन योग एवं स्वास्थ्य पर व्याख्यान

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के दृष्टिगत साप्ताहिक योग कार्यक्रम के तहत योग एवं स्वास्थ्य विषय पर 16 जून को एक ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि के स्वागत एवं प्रस्ताविकी के साथ महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र जी के द्वारा हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. द्वारका नाथ, अध्यक्ष, दर्शन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर रहे। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि योग के अनेक आयाम है। योग अपने आप में एक सम्पूर्ण विज्ञान है। योग मे जो बातें हैं उसका परीक्षण किया जा सकता हैं। इसके द्वारा शरीर, मन एवं आत्मा तीनों लाभान्वित होता है। योग के स्वास्थ्य पक्षों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि ध्यान करने से व्यक्ति का दृष्टिकोण सकारात्मक हो जाता है। योग हमें स्वयं की क्षमता से अवगत कराता है तथा स्वयं को निदान तलाशने का मार्ग बताता है। इस आनलाइन व्याख्यान में कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, प्रो. अनुभूति दुबे द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के आचार्य प्रो. दिनेश यादव, डॉ. सूर्यकांत, डॉ. रमेश चंद, डॉ. संजय तिवारी सहित शोधपीठ के डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल, विद्यार्थी आदि जुड़े रहे।

साप्ताहिक योग कार्यक्रम के तीसरे दिन बच्चों एवं उच्च रक्तचाप हेतु योगाभ्यास

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के उपलक्ष्य में साप्ताहिक योग कार्यक्रम के तीसरे दिन भी योगाभ्यास का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र जी के द्वारा हुआ। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 8 बजे महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में 5 से 15 वर्ष के आयु के बच्चों के लिए योग का प्रशिक्षण डॉ. विनय मल्ल के द्वारा दिया गया। विभिन्न स्कूलों के लगभग 20 बच्चों ने इस प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया। इन बच्चों ने योग के प्रति विशेष उत्साह दिखाया। इसके बाद 10 बजे शोधपीठ में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए योगासन एवं प्राणायाम पर डॉ. प्रफुल्ल चंद द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में उच्च रक्तचाप से ग्रस्त रोगियों के लिए योगाभ्यास के तरीके सिखाए गए। इस कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, प्रो. अनुभूति दुबे द्वारा योग प्रशिक्षक सहित समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. संजय तिवारी, डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल तथा विद्यार्थी आदि जुड़े रहे।

साप्ताहिक योग कार्यक्रम के चौथे दिन प्रौढ़ों एवं सर्वाइकल स्पांडीलाइटिस हेतु योगाभ्यास

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के उपलक्ष्य में साप्ताहिक योग कार्यक्रम के चौथे दिन भी योगाभ्यास का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र जी के द्वारा हुआ। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 8 बजे महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में 50 से 70 वर्ष के आयु के प्रौढ़ों के लिए योग का अभ्यास डॉ. विनय मल्ल के द्वारा कराया गया। इसके बाद 10 बजे शोधपीठ में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से सर्वाइकल स्पांडीलाइटिस के रोगियों के लिए योगासन पर डॉ. प्रफुल्ल चंद द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में सर्वाइकल स्पांडीलाइटिस से ग्रस्त रोगियों के लिए योगाभ्यास के तरीके सिखाए गए। इस ऑनलाइन कार्यक्रम का संचालन हर्षवर्धन सिंह द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल तथा विद्यार्थी आदि जुड़े रहे।

साप्ताहिक योग कार्यक्रम के पाँचवे व छठवें दिन गर्भवती महिलाओं हेतु योगाभ्यास व संगीतमय योग

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के उपलक्ष्य में साप्ताहिक योग कार्यक्रम के पाँचवे दिन भी योगाभ्यास का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत जिला महिला चिकित्सालय में 8 बजे गर्भवती महिलाओं को प्रशिक्षित योग प्रशिक्षक द्वारा डाक्टरों के देखरेख में योगाभ्यास कराया गया। इस कार्यक्रम में हर्षवर्धन सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल आदि उपस्थित रहे।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के उपलक्ष्य में साप्ताहिक योग कार्यक्रम के छठवें दिन भी योगाभ्यास का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, प्रो. अनुभूति दुबे के द्वारा हुआ। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 8 बजे महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में संगीतमय योग का आयोजन किया गया। योगाभ्यास डॉ. विनय मल्ल के द्वारा कराया गया। इसमें संगीत से जोड़कर योगाभ्यास के तरीके सिखाए गए। धन्यवाद ज्ञापन महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र जी के द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव, प्रो. शांतनु रस्तोगी, प्रो. धर्मव्रत तिवारी, प्रो. धनंजय कुमार, डा. अमित उपाध्याय, डा. सूर्यकांत तिवारी, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, डॉ. सुनील कुमार, हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल तथा विद्यार्थी आदि उपस्थित रहे।

संगीतमय योगाभ्यास

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर वृहद योग कार्यक्रम

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के अवसर पर सुबह 5:30 बजे माननीय कुलपति प्रो. पूनम टंडन के नेतृत्व में वृहद योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 2 हजार से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। इसमें विश्वविद्यालय के सभी संकायों के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षकगण एवं शोध–छात्र, कर्मचारी गण एवं शहर के नागरिको ने योगाभ्यास किया। इस अवसर पर कुलपति ने अपने सम्बोधन मे कहा कि आपका शरीर आपका मंदिर है। इसे शुद्ध एवं स्वस्थ रखें। आभार ज्ञापन अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, प्रो. अनुभूति दुबे के द्वारा किया गया।

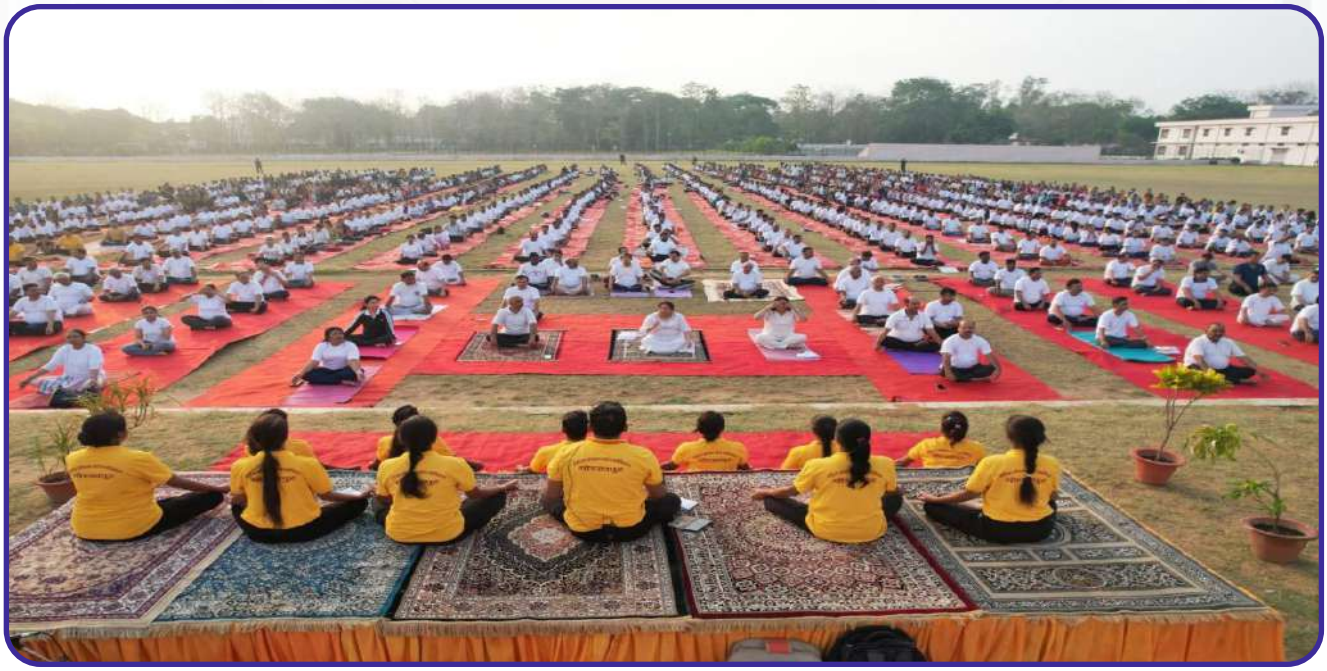

'हठयोग की उपादेयता' विषय पर व्याख्यान

महायोगी गुरु गोरखनाथ योग संस्थान और महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की ओर से गोरखनाथ मंदिर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित सात दिवसीय योग शिविर के छठे दिन 20 जून को "हठयोग की उपादेयता" विषय पर महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डा. कुशल नाथ मिश्र का व्याख्यान हुआ। डा. कुशल नाथ मिश्र ने इस विषय पर विस्तार से अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि योग विद्या भारतीय ऋषि–मुनियों की जीवनचर्या रही है। आध्यात्मिक दृष्टि से योग से तात्पर्य "समाधि" है। यानी आत्मसाक्षात्कार की स्थिति को प्राप्त कर लेना ही योग है। डा. मिश्र ने कहा कि लौकिक दृष्टि से योग शब्द का अर्थ संयोग अथवा मेल से है। वस्तुतः योग अस्मिता वृत्ति से निरोध भी है, यह योग के वियोग की घटना है। गूढ़ अर्थों में, यही संयोग का वियोग ही योग है। योग के विषय में ज्ञान कराने वाले अनेक मार्ग हैं, जैसे राजयोग, हठयोग, लययोग, मंत्रयोग, भक्तियोग। उन्होंने कहा कि साधना चाहे किसी भी ढंग से की जाए, जब तक दैहिक आसक्ति से छुटकारा नहीं मिल जाता, मन की चंचलता तिरोहित नहीं हो जाती, तब तक योग मार्ग में प्रगति या आत्म साक्षात्कार संभव नहीं। मन का विज्ञान "राजयोग" है। और आज के युग में मानव कल्याण का समीचीन साधन जो है, वह राजयोग की उच्च स्थिति को प्राप्त कराने में सहायक हठयोग है। उन्होंने कहा कि जिसमें प्राण और अपान, नाद और बिन्दु, जीवात्मा और परमात्मा एक हो जाता है। उसी को घट अवस्था या हठयोग कहते हैं।

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'योग और साहित्य' का आयोजन

संगोष्ठी के ब्रोशर का प्रथम पृष्ठ

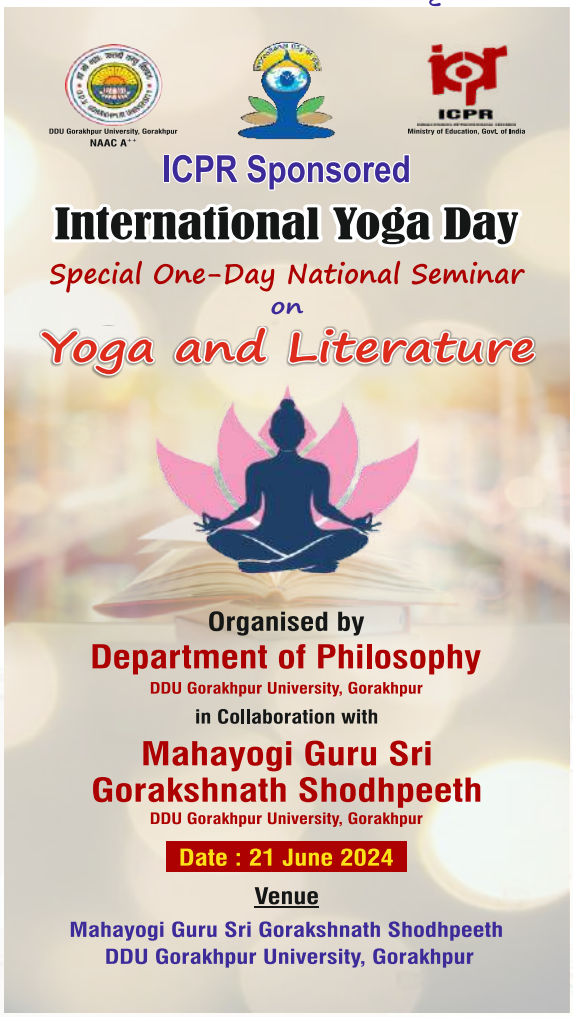

संरक्षक
प्रो. पूनम टंडन
कुलपति
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,गोरखपुर

विभागाध्यक्ष
प्रो. द्वारका नाथ
दर्शनशास्त्र विभाग
दी.द.उ.गो.वि.गो.

उप निदेशक
डॉ. कुशल नाथ मिश्र
महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दी.द.उ.गो.वि.गो.

संयोजक
डॉ. संजय कुमार राम
सहायक प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
दी.द.उ.गो.वि.गो.

आयोजक
डॉ. रमेश चंद
सहायक प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
दी.द.उ.गो.वि.गो.

सह–आयोजक
डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
म.गु. श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दी.द.उ.गो.वि.गो.

सह–आयोजक
डॉ. सुनील कुमार
रिसर्च एसोसिएट
म.गु. श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दी.द.उ.गो.वि.गो.

संगोष्ठी का परिचय

योग और साहित्य पर सेमिनार योग की प्राचीन और आधुनिक प्रथाओं के बीच जटिल संबंधों और संस्कृतियों में साहित्यिक कार्यों पर उनके गहन प्रभाव की खोज करता है। योग, प्राचीन भारत से उत्पन्न एक अनुशासन है, जिसमें सद्भाव और आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के उद्देश्य से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अभ्यास शामिल हैं। साहित्य, मानव अनुभव की अभिव्यक्ति के रूप में, अक्सर इन सिद्धांतों को दर्शाता है, जो योग की परिवर्तनकारी शक्ति को दर्शाता है। पतंजलि ने अपने मौलिक ग्रंथ योग सूत्र (लगभग 400 ई.) में, योग के आठ अंगों का वर्णन किया है, जिसमें नैतिक आचरण, शारीरिक आसन, श्वास नियंत्रण, प्रत्याहार, एकाग्रता, ध्यान और आत्म–साक्षात्कार के महत्व पर जोर दिया गया है। उनके कार्यों में योग की परिवर्तनकारी क्षमता पर प्रकाश डाला गया है, जो इन सिद्धांतों से प्रेरित साहित्यिक कार्यों में प्रतिध्वनित एक विषय है।

नाथ परंपरा (11वीं शताब्दी की शुरुआत) में एक प्रमुख आचार्य गोरखनाथ ने पतंजलि की शिक्षाओं का विस्तार किया, जिसमें हठ योग की शारीरिक और ध्यान संबंधी क्रियाओं पर जोर दिया गया। उनके लेखन में शरीर और मन के मिलन को रेखांकित किया गया है, एक अवधारणा जो समग्र कल्याण और ज्ञानोदय की खोज करने वाले साहित्यिक आख्यानों में प्रतिध्वनित होती है। पश्चिमी दुनिया में योग को पेश करने वाले एक महत्वपूर्ण व्यक्ति स्वामी विवेकानंद ने सभी प्राणियों की एकता और योग के माध्यम से आध्यात्मिक जागृति की क्षमता पर जोर दिया। राज योग (1896) जैसे अपने कार्यों में, उन्होंने योग के दार्शनिक आधारों को स्पष्ट किया है, जिसने मानव चेतना और आध्यात्मिक विकास के अनगिनत साहित्यिक अन्वेषणों को प्रेरित किया है। श्री अरबिंदो और महर्षि महेश योगी ने आधुनिक अध्यात्म और साहित्य में योग के एकीकरण को आगे बढ़ाया। अरबिंदो की द लाइफ डिवाइन (1940) और महेश योगी की ट्रांसेंडेंटल मेडिटेशन की शिक्षाएँ चेतना के उच्चतर स्तरों को प्राप्त करने में योग की परिवर्तनकारी शक्ति को उजागर करती हैं। सेलिंग टू बाइज़ेंटियम में डब्ल्यू बी येट्स आध्यात्मिक यात्रा पर निकलते हैं, योग के माध्यम से अपनी इंद्रियों को वापस खींचकर और उन्हें अपने मन में केन्द्रित करके उच्च आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त करते हैं, जो समाधि प्राप्त करने के समान है। 'योग और साहित्य' पर संगोष्ठी साहित्य में प्रेरणा और अंतर्दृष्टि के स्रोत के रूप में योग के स्थायी महत्व को रेखांकित करती है। प्राचीन काल से कई ऋषियों और आध्यात्मिक मार्गदर्शकों में से पतंजलि, गोरखनाथ, विवेकानंद, श्री अरबिंदो और महेश योगी की शिक्षाएँ विचारों की एक समृद्ध ताने–बाने प्रदान करती हैं जो साहित्यिक कार्यों में गूंजती रहती हैं, जो मानवीय स्थिति और आत्म–साक्षात्कार की खोज पर गहन चिंतन प्रस्तुत करती हैं। कुछ संबंधित (लेकिन सीमित नहीं) उप–विषय इस प्रकार हैं–

- शास्त्रीय ग्रंथों में योग का दर्शन और अभ्यास
- योग और आधुनिक भारतीय दर्शन
- साहित्य में योग की पश्चिमी व्याख्याएँ
- कविता में योग और रहस्यवाद
- साहित्य में एक रूपक के रूप में योग
- पूर्वी और पश्चिमी दार्शनिक परंपराओं का तुलनात्मक अध्ययन
- आधुनिक स्व–सहायता और कल्याण साहित्य पर योग का प्रभाव
- योग और नारीवादी साहित्य
- योग और साहित्य के लिए अंत:विषय दृष्टिकोण
- भारतीय अंग्रेजी लेखकों के कार्यों में योग
- योग और नाथ पंथ

आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का विवरण

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में माननीय कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के अवसर पर भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से दर्शनशास्त्र विभाग एवं महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के तत्वावधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'योग और साहित्य' का आयोजन किया गया।

इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. दीप नारायण यादव, पूर्व प्रति कुलपति, नीलांबर पीताम्बर विश्वविद्यालय, झारखंड एवं मुख्य वक्ता प्रो. ऋषिकान्त पांडेय, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज रहे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. पूनम टंडन के द्वारा की गयी।

कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि प्रो. दीप नारायण यादव एवं प्रो. ऋषिकान्त पांडेय के द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया। इस संगोष्ठी के संयोजक गोरखपुर विश्वविद्यालय के डॉ. संजय कुमार राम, सहायक आचार्य, दर्शनशास्त्र विभाग ने अतिथियों का स्वागत किया तथा प्रस्ताविकी रखा। इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रो. दीप नारायण यादव ने अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि कृष्ण, बुद्ध एवं गोरखनाथ के बिना योग की कल्पना नहीं की जा सकती। गोरखनाथ के साधना मार्ग से अंतर्बोध किया जा सकता है। उन्होंने योग का जीवन पर प्रभाव की चर्चा करते हुए कहा कि योग का हमारे जीवन पर कदम कदम पर प्रभाव है। योग हमारे हर क्रिया में है। योग अब हर क्षेत्र में आ रहा है। योग स्वयं एवं समाज दोनों के लिए आवश्यक है। मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र के विभागाध्यक्ष, प्रो. ऋषिकान्त पांडेय ने अपने सम्बोधन में कहा कि योग मनुष्य को डिसॉर्डर से ऑर्डर फॉर्म में लाता है। हमारे व्यावहारिक समस्याओं की जड़ आसक्ति एवं अहं है। योग के द्वारा इसको नियंत्रित किया जा सकता है। उन्होंने योग के मनोवैज्ञानिक पहलू की चर्चा करते हुए कहा कि योग से मनोवैज्ञानिक एवं मानसिक समस्याएं दूर की जा सकती है।

इस संगोष्ठी की ऑनलाइन माध्यम से अध्यक्षता कर रहीं गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि हठयोग के प्रवर्तक गोरक्षनाथ जी हैं। गोरखपुर योग की नगरी है। हठयोग का यहाँ जन्म हुआ है। योग के द्वारा विद्वान एवं जनमानस में जागृत उत्पन्न कर गोरखनाथ जी के संदेश को सामान्य जन में प्रसारित करें। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि आपका शरीर आपका मंदिर है, योग के द्वारा इसे स्वस्थ रखिए। योग को अपनी जीवनचर्या का नियमित भाग बनाये। कोई भी एक्सरसाइज़ योग से बेहतर नहीं है। योग के माध्यम से स्वयं एवं समाज का सशक्तिकरण कर अपना योगदान सुनिश्चित करें। योग से अपने जीवन को स्वस्थ बनाएं।

उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन गोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक, डॉ. कुशल नाथ मिश्र जी के द्वारा किया गया। इस संगोष्ठी के दूसरे सत्र में मुख्य वक्ता इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज के अंग्रेजी विभाग के प्रो. मनोज कुमार एवं विशिष्ट वक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के महिला महाविद्यालय के डॉ. प्रवीण कुमार पटेल रहे। उन्होंने योग एवं साहित्य के अंतरसंबंधों पर अपना विचार रखा। अध्यक्षता अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष प्रो. अजय कुमार शुक्ला के द्वारा किया गया। समापन सत्र की अध्यक्षता अंग्रेजी विभाग के प्रो. गौर हरि बेहरा के द्वारा किया गया। उन्होंने काव्य, कविता, दृश्य, नाटक आदि साहित्य के दार्शनिक विमर्श को योग के अंतरसंबंध पर विस्तार से प्रकाश डाला। समापन सत्र में डॉ. रमेश चंद के द्वारा इस संगोष्ठी का समापन सारांश प्रस्तुत किया गया। इस संगोष्ठी में 10 तकनीकी सत्र आयोजित हुए जिसमें पचास से अधिक विषय विशेषज्ञों ने अपने विचार शोध पत्रों के माध्यम से रखे एवं लगभग 250 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

ऑनलाइन प्रथम तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ. सुनील कुमार, रिसर्च एसोसिएट, महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ, मोडेरेटर हर्षवर्धन सिंह, शोध अध्येता, महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, द्वितीय तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ. राजू गुप्ता, सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग, मोडेरेटर प्रिया सिंह, शोध अध्येता, महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, तृतीय सत्र के अध्यक्ष डॉ. संजय कुमार तिवारी, सहायक आचार्य, दर्शनशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, चतुर्थ तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ. नरेंद्र कुमार, सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, पंचम सत्र के अध्यक्ष डॉ. रमेश चंद, सहायक आचार्य, दर्शनशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, षष्ठम सत्र के अध्यक्ष डॉ. सतीश कुमार प्रजापति, सहायक आचार्य, अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज, सप्तम तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ. राम नरेश राम, सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, अष्टम तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ. अभिषेक प्रजापति, एसोसिएट प्रोफेसर, रेवा विश्वविद्यालय, बेंगलुरू, नवं तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ. साजिद हुसैन, सहायक आचार्य, उर्दू विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर रहे। ऑफलाइन तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ. सूरज प्रकाश गुप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, बाबा राघव दास कॉलेज, बरहज, देवरिया रहे।

इस संगोष्ठी के समापन सत्र में आभार ज्ञापन अंग्रेजी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. संजीव विश्वकर्मा के द्वारा किया गया। मंच का संचालन दीप्ति राय के द्वारा किया गया। इस संगोष्ठी में देशभर के अनेक विश्वविद्यालय से आये हुए विद्वान, विषय विशेषज्ञ, प्रतिभागी एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण एवं शोध–छात्र, विद्यार्थी समेत प्रो. अजय शुक्ला, प्रो. सुनीता मुर्मू, प्रो. गौर हरि बोहरा, प्रो. दीपक प्रकाश त्यागी, डॉ. मनोज द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार, डॉ. संजय तिवारी, डॉ. दीपक गुप्ता, हर्षवर्धन सिंह, प्रिया सिंह आदि उपस्थित रहे।

विविध

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के दृष्टिगत नियमित योगाभ्यास की शपथ ग्रहण करते हुए शोधपीठ परिवार के सदस्य, 14 जून 2024

शोधपीठ में प्रस्तावित नाथपंथ संग्रहालय हेतु मा. कुलपति के समक्ष प्रस्तुति

प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली का शोधपीठ में भ्रमण, 6 अप्रैल, 2024

26 फरवरी 2024 को श्रीरामजन्मभूमि आन्दोलन में गोरक्षपीठ का योगदान विषय पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण, प्रथम स्थान नेहा मिश्रा, द्वितीय स्थान पंकज श्रीवास्तव, तृतीय स्थान अनुप्रिया सिंह, राज गुप्ता, नीरज मणि त्रिपाठी,सांत्वना पुरस्कार, मनीष सिंह, अंबालिका तिवारी, 9 मई 2024

विविध

लोक सभा चुनाव 2024 के दृष्टिगत शोधपीठ से शुरू मतदान जागरूकता अभियान, 31 मई 2024

प्रो. सदानन्द गुप्त, पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष,
उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ तथा
डा. प्रदीप कुमार राव, कुलसचिव, गोरखनाथ
विश्वविद्यालय, गोरखपुर का
शोधपीठ के पुस्तकालय में भ्रमण, 14 जून 2024

डॉ. सलील कुमार पाण्डेय द्वारा
चेतनता पत्रिका भेंट
15 अप्रैल 2024

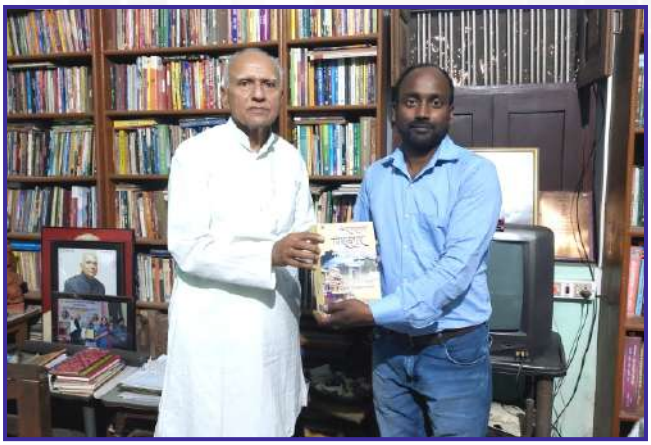

डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, सम्पादक, शहरनामा गोरखपुर
द्वारा पुस्तक भेंट, 15 अप्रैल 2024

वैश्विक संस्कृत मंच की कार्यकारिणी मिटिंग
8 अप्रैल 2024

शोध पत्र प्रकाशन

क्र.सं.	नाम	शोध पत्र का शीर्षक	पत्रिका	अंक
1.	डॉ. कुशल नाथ मिश्र	वर्तमान में भारत नेपाल सम्बन्धः एक विहंगम दृष्टि	मानविकी	अप्रैल 2024
2.	डॉ. कुशल नाथ मिश्र	Role of Nath Panth in India-Nepal Relationship	मानविकी	अप्रैल 2024
3.	डॉ. सुनील कुमार	वर्तमान में भारत नेपाल सम्बन्धः एक विहंगम दृष्टि	मानविकी	अप्रैल 2024
4.	डॉ. सुनील कुमार	नाथपंथ का संत परम्परा पर प्रभाव	योगवाणी	मई 2024
5.	हर्षवर्धन सिंह	Role of Nath Panth in India-Nepal Relationship	मानविकी	अप्रैल 2024
6.	हर्षवर्धन सिंह	स्वास्थ्य के क्षेत्र में हठयोग की प्रासंगिकता	शोध–ऋतु	जून 2024
7.	हर्षवर्धन सिंह	भारतीय ज्ञान परम्परा एवं नाथ पंथ	शोध दृष्टि	जून 2024

शोध पत्र प्रस्तुतिकरण

क्र.सं.	नाम	शोध पत्र का शीर्षक	संगोष्ठी/सम्मेलन
1.	डॉ. सोनल सिंह	योग एवं नाथपंथ	राष्ट्रीय संगोष्ठी, 21 जून 2024 दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर (ऑनलाइन)
2.	डॉ. सुनील कुमार	Survey of Yoga Literature	राष्ट्रीय संगोष्ठी, 21 जून 2024 दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर
3.	हर्षवर्धन सिंह	नाथपंथ एवं योग साधना	राष्ट्रीय संगोष्ठी, 21 जून 2024 दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर
4.	डॉ. कुंवर रणंजय सिंह	नाथपंथ एवं कुण्डलिनी जागरण	राष्ट्रीय संगोष्ठी, 21 जून 2024 दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर
5.	प्रिया सिंह	गोरखनाथ एवं नाथपंथ	राष्ट्रीय संगोष्ठी, 21 जून 2024 दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

मीडिया कवरेज

अमर उजाला

गोरखपथ का वीसी ने किया विमोचन

ई-पत्रिका का विमोचन करतीं कुलपति प्रो. पूनम टंडन व अन्य। संवाद

गोरखपुर। महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की त्रैमासिक ई-पत्रिका गोरख पथ के दूसरे अंक का विमोचन कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने बृहस्पतिवार को किया।

शोधपीठ के उपनिदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र ने बताया कि यह पत्रिका विश्वविद्यालय एवं शोधपीठ की वेबसाइट पर प्रकाशित की जाती है। इस अवसर पर डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, डॉ. सुनील कुमार, हर्षवर्धन उपस्थित रहे। संवाद

नाथपंथ का अनसुना इतिहास जुटाएगी गोवि की शोध पीठ

नाथपंथ का इतिहास जुटाएगी गोरक्षनाथ शोधपीठ

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ नाथपंथ का इतिहास जुटाएगी। नाथपंथ देश-विदेश तक फैला है, लेकिन इसकी लोकप्रियता अभी उतनी नहीं है। बहुत जगहों पर इसकी मान्यताएं और इतिहास अलग-अलग हैं।

आम लोगों तक इसकी मान्यताओं और इतिहास की जानकारी पहुंचाने के लिए शोधपीठ में नाथपंथ का विश्वकोश तैयार किया जा रहा है। इसकी समृद्धि के लिए शोधार्थी ऐसे मठ-मंदिरों में जाएंगे और वहां के लोगों से संपर्क साधकर नाथपंथ से जुड़ा स्थानीय इतिहास जुटाएंगे।

हाल ही में कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने नाथपंथ विश्वकोश के निर्माण के लिए बैठक बुलाई और योजना के क्रियान्वयन की रूपरेखा तैयार कराई। तय किया कि विश्वकोश के निर्माण के लिए सलाहकार समिति बनाई जाएगी। शोधपीठ के उपनिदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र ने बताया कि नाथपंथ के विश्वकोश की मूल प्रति हिंदी भाषा में तैयार की जाएगी। संवाद

नाथपंथ विश्वकोश निर्माण हेतु आयोजित हुई बैठक

नाथपंथ विश्वकोष निर्माण के लिए बनेगी समिति

गोरखपुर। डीडीयू के महायोगी गुरु गोरखनाथ शोधपीठ द्वारा 'नाथपंथ विश्वकोष' निर्माण की योजना और क्रियान्वयन के लिए कुलपति प्रो. पूनम टंडन की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में तय हुआ कि नाथ पंथ विश्वकोष के निर्माण के लिए एक सलाहकार समिति बनाई जाएगी।

कुलपति ने बताया कि विद्वानों की सूची भी तैयार की जाएगी। यह विश्वकोष हिन्दी भाषा में तैयार किया जाएगा। बाद में इसका अनुवाद अन्य भाषाओं में किया जाएगा। यह कई खंडों में तैयार किया जाएगा। बैठक में प्रो. सदानंद गुप्त, जेएनयू के प्रो. संतोष कुमार शुक्ल, डॉ. रंगनाथ त्रिपाठी, डॉ. प्रांजेश मिश्र, डॉ. कुशल नाथ मिश्र आदि मौजूद रहे।

गुरु गोरखनाथ शोधपीठ बनेगा नाथपंथ से जुड़े इतिहासों का ज्ञान संग्रह

गुरु गोरखनाथ शोधपीठ बनेगा नाथपंथ से जुड़े इतिहासों का ज्ञान संग्रह

... के उपनिदेशक कुशल नाथ मिश्र बताते हैं कि लाइब्रेरी को और हाईटेक बनाया जाएगा। इसके लिए कई समितियां तैयार हो रही हैं, जो देश के कोने-कोने में मौजूद मठ मंदिरों तक जाकर नाथ पंथ के इतिहास को एकत्र करेंगे और उसे विश्वकोश में समाहित किया जाएगा। वहीं शोधपीठ में लाइब्रेरी भी मौजूद है जहां पुस्तकों के जरिए लोग इससे और जुड़ी जानकारी ले सकते हैं। वहीं 4000 पुस्तकें भी गुरु गोरखनाथ शोधपीठ में मौजूद लाइब्रेरी में शामिल होंगी।

नाथपंथ विश्वकोश निर्माण के लिए बनेगी समिति

... तैयार की जाएगी।

बैठक में उप्र हिंदी संस्थान के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानंद गुप्त ने विश्वकोश की योजना और उसके क्रियान्वयन के लिए अपने सुझाव दिए। (विज्ञप्ति)।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक **सुपर फास्ट टाइम्स** (कुशीनगर/गोरखपुर/बार...

प्राण प्रकृति एवं शरीर के सभी ऊजाओं का मूल है - डॉ०सुनील कुमार

गोरक्षनाथ शोधपीठ में विशिष्ट व्याख्यान का हुआ आयोजन

मुख्य संवाददाता (शाश्वत राम तिवारी)

गोरखपुर। सुपर फास्ट टाइम्स

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में कुलपति प्रोफेसर पूनम टंडन के संरक्षण में एक विशिष्ट व्याख्यान विषय "प्राण की नाथ यौगिक अवधारणा" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ.कुशलनाथ मिश्र के द्वारा किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ.सुनील कुमार रहे। विशिष्ट व्याख्यान के वक्ता डॉ.सुनील कुमार ने प्राण की नाथ यौगिक अवधारणा पर विस्तार से समझाते हुए प्राण के विविध स्वरूपों पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्राण को आधुनिक विज्ञान के संदर्भ में समझाया। डॉ.सुनील ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्राण प्रकृति एवं शरीर के सभी ऊजाओं का मूल है। प्राण अति सूक्ष्म है। प्राण से ही सभी शक्तियों की उत्पत्ति होती है। प्राण शरीर में नाड़ियों के माध्यम से प्रवाहित होता है। इन नाड़ियों का नियंत्रण नाड़ियों के जाल एवं केंद्र स्वरूप चक्रों के माध्यम से होता है। उन्होंने प्राण के नियमन की चर्चा करते हुए कहा कि प्राण के नियंत्रण से प्रकृति की सभी शक्तियों पर नियंत्रण किया जा सकता है। श्वसन क्रिया शरीर में प्राण की सरलतम अभिव्यक्ति है। प्राण के नियमन का सबसे आसान तरीका श्वसन प्रक्रिया का नियंत्रण करना है। इसी को प्राणायाम, बंध एवं मुद्राओं के माध्यम से साधा जाता है। उन्होंने नाथ योगियों के योगदानों के बारे में बताते हुए कहा कि नाथ योगियों ने प्राण के ऊपर महत्वपूर्ण कार्य किया है। व्याख्यान में श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के सहायक निदेशक डा.सोनल सिंह, सहायक ग्रन्थालयी डॉ.मनोज कुमार द्विवेदी, चिन्मयानंद मल्ल, शोध अध्येता डा.कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, रणजीत कुमार गुप्ता, मोनिका रावत, नीतू जायसवाल, सुघोष मिश्र, अन्य विभागों के शोध छात्र एवं परास्नातक कक्षाओं के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

कुलपति ने गोरख पथ का किया विमोचन

गोरखपुर। महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की त्रैमासिक ई-पत्रिका गोरख पथ के दूसरे अंक का विमोचन कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने गुरुवार को किया। कुलपति ने पत्रिका के डिजाइन एवं कंटेंट के बारे में कहा कि शोधपीठ की गतिविधियां समाज के लिए प्रेरक होनी चाहिए। शोधपीठ के उप निदेशक डॉ कुशलनाथ मिश्र ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर डॉ सोनल सिंह, डॉ. मनोज द्विवेदी, डॉ सुनील कुमार एवं हर्षवर्धन सिंह उपस्थित रहे।

प्राण प्रकृति एवं शरीर के सभी ऊजाओं का मूल है : डॉ. सुनील

गोरक्षनाथ शोधपीठ में विशिष्ट व्याख्यान का हुआ आयोजन

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। डीडीयूजीयू स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में मंगलवार को विशिष्ट व्याख्यान विषय प्राण की नाथ यौगिक अवधारणा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र के द्वारा किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार रहे। डॉ. सुनील कुमार ने प्राण की नाथ यौगिक अवधारणा पर विस्तार से समझाते हुए प्राण के विविध स्वरूपों पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्राण को आधुनिक विज्ञान के संदर्भ में समझाया। डॉ. सुनील ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्राण प्रकृति एवं शरीर के सभी ऊजाओं का मूल है। प्राण अति सूक्ष्म है। प्राण से ही सभी शक्तियों की उत्पत्ति होती है। प्राण शरीर में नाड़ियों के माध्यम से प्रवाहित होता है। इन नाड़ियों का नियंत्रण नाड़ियों के जाल एवं केंद्र स्वरूप चक्रों के माध्यम से होता है। उन्होंने प्राण के नियमन की चर्चा करते हुए कहा कि प्राण के नियंत्रण से प्रकृति की सभी शक्तियों पर नियंत्रण किया जा सकता है। श्वसन क्रिया शरीर में प्राण की सरलतम अभिव्यक्ति है। प्राण के नियमन का सबसे आसान तरीका श्वसन प्रक्रिया का नियंत्रण करना है। इसी को प्राणायाम, बंध एवं मुद्राओं के माध्यम से साधा जाता है। उन्होंने नाथ योगियों के योगदानों के बारे में बताते हुए कहा कि नाथ योगियों ने प्राण के ऊपर महत्वपूर्ण कार्य किया है।

इस व्याख्यान में श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के सहायक निदेशक डा. सोनल सिंह, सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, चिन्मयानंद मल्ल, शोध अध्येता डा. कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, रणजीत कुमार गुप्ता, मोनिका रावत, नीतू जायसवाल, सुघोष मिश्र, अन्य विभागों के शोध छात्र एवं परास्नातक कक्षाओं के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

'सृष्टि के उद्भव के साथ ही हुआ योग का उद्भव'

त्रैमासिक ई-पत्रिका का कुलपति ने किया विमोचन

साधना का मार्ग है नाथ योग : प्रो. संतोष शुक्ल

गोरक्षनाथ शोधपीठ में नाथ योग पर हुआ आनलाईन व्याख्यान

नाथ योग साधना का मार्ग है-प्रो. संतोष कुमार

नाथपंथ विश्वकोश के लिए बनेगी समिति

गोरखपुर। महायोगी गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की ओर से "नाथपंथ विश्वकोश" निर्माण की योजना और क्रियान्वयन के लिए बैठक आयोजित हुई। इसमें तय हुआ कि नाथ पंथ विश्वकोश के निर्माण के लिए एक सलाहकार समिति बनाई जाएगी। साथ ही विद्वानों की सूची तैयार की जाएगी। यह विश्वकोश हिंदी भाषा में तैयार किया जाएगा। बाद में इसका अनुवाद अन्य भाषाओं में किया जाएगा। वर्णमाला के क्रम में परिभाषित शब्दों का संकलन किया जाएगा। यह विश्वकोश कई खंडों में तैयार किया जाएगा।

योग विद्या का स्थान हर युग में शीर्ष पर रहेगा

साधना का मार्ग है नाथ योग : प्रो. संतोष

गोरखपुर : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में शनिवार को 'भारतीय ज्ञान परंपरा: नाथ योग' विषय पर आनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन विभाग के प्रो. संतोष कुमार शुक्ल ने कहा कि नाथ योग साधना का मार्ग है। मन की स्थिरता के बिना मोक्ष नहीं हो सकता।

कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यक्रम समन्वयक डा. कुशलनाथ मिश्र ने किया। संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डा. सुनील कुमार और आभार ज्ञापन सहायक निदेशक डा. सोनल सिंह किया।। व्याख्यान से नेपाल से प्रो. भागवत ढकाल, डा. सुधाने, डा. लक्ष्मी मिश्र, डा. अमीद राय, डा. कुलदीपक शुक्ल, डा. रंजन लता, डा. मनोज कुमार द्विवेदी आदि जुड़े। (विज्ञप्ति)

गोरक्षनाथ शोधपीठ जुटाएगा अनसुना इतिहास

गोरख पथ के दूसरे अंक का कुलपति ने किया विमोचन

गोरखपुर : महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की त्रैमासिक ई-पत्रिका गोरख पथ के दूसरे अंक का विमोचन कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने गुरुवार को किया। कुलपति ने पत्रिका के डिजाइन एवं कंटेंट को देखने के बाद कहा कि शोधपीठ की गतिविधियां समाज के लिए प्रेरणादायी होनी चाहिए। शोधपीठ के उपनिदेशक डा. कुशलनाथ मिश्र ने बताया कि शोधपीठ के शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों से युक्त यह पत्रिका नियमित रूप से विश्वविद्यालय एवं शोधपीठ के आधिकारिक वेबसाइट पर प्रकाशित की जाती है। (विज्ञप्ति)

मीडिया कवरेज

कोई भी कसरत योग से बेहतर नहीं : प्रो. पूनम टंडन

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (22 June): योग दिवस के उपलक्ष्य में शनिवार को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से दर्शनशास्त्र विभाग एवं गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के संयुक्त तत्वावधान में डीडीयूजीयू में शनिवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया. संगोष्ठी को बतौर अध्यक्ष संबोधित करते हुए वीसी प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि योग से बेहतर कोई कसरत नहीं. इसलिए इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं. अतिथि नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय, झारखंड के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. दीप नारायण ने कहा कि बुद्ध व गुरु गोरखनाथ के बिना योग की कल्पना नहीं की जा सकती.

योग से मनुष्य रहता है निरोग : प्रो. अलका

योग ज्ञान का सबसे बड़ा और सर्वोत्तम साधन है - प्रो. राम दरश राय

भारत में सर्वत्र गूंजती है गोरखनाथ की गोरखबानी

गोरखपुर। गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु श्रीगोरखनाथ शोधपीठ में योग कार्यशाला में रविवार को योग प्रशिक्षण एवं ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी रहे। ने कहा कि योग बहुत व्यापक है। गोरखनाथ की गोरखबानी भारत में सर्वत्र गूंजती है। योग प्रशिक्षण डॉ. विनय कुमार मल्ल ने दिया। स्वागत उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र, संचालन डॉ. सुनील कुमार और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सोनल सिंह ने किया। संवाद

कल से आयोजित होगा योगासन खेल प्रतियोगिता

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। डिस्ट्रिक्ट योगासन स्पोर्टस एसोसिएशन गोरखपुर एवं महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध पीठ दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में द्वितीय जनपद स्तरीय योगासन खेल प्रतियोगिता 2024 का आयोजन 13 एवं 14 मई को शोधपीठ के परिसर में किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में जनपद की करीब 30 टीमें प्रतिभाग कर रही हैं। यह जानकारी एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ0 विनय कुमार मल्ल ने दी उन्होंने बताया कि 13मई को सुबह 10 बजे से प्रतियोगिता का शुभारम्भ होगा इस मौके पर अतिथि के रूप में अभिषेक कुमार पांडे प्राचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान गोरखपुर रमेंद्र कुमार सिंह जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी गोरखपुर, विवेक जायसवाल जिला समन्वयक समग्र शिक्षा, राजू कुमार जायसवाल चेयरमैन जेडी गोयनका पब्लिक स्कूल गोरखपुर रहेंगे' 13 मई सोमवार को प्रतियोगिता के अंतर्गत 9 से 14 वर्ष एवं 14 से 18 वर्ष की बालक/ बालिकाएं एवं 14 मई दिन मंगलवार को 18 से 28 वर्ष 28 से 35 वर्ष तथा 35 वर्ष से 55 वर्ष के विभिन्न योगासन की प्रतियोगिताएं होंगी अंतिम दिन 15 मई दिन बुधवार को सुबह 9 बजे प्रतियोगिता का समापन होगा।

Notice

I No JC 780993 F Nb/Sub Dayaram Maurya Posted at 541 FRI c/o 56 APO hereby declare that I have changed the name of my mother from SINGARI DEVI MAURYA To SINGARI in my army record.

R.No.-3446

योग कार्यशाला का हुआ आयोजन

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टण्डन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय ग्रीष्मकालीन योग कार्यशाला विषय 'योग एवं आजीविका शनिवार को योग प्रशिक्षण के तीसरे दिन भी प्रतिभागियों की काफी संख्या रही। योग प्रशिक्षण डा. विनय कुमार मल्ल के द्वारा दिया गया। योग प्रशिक्षण में लगभग 70 लोगों ने भाग लिया। जिसमे स्नातक, परास्नातक आदि के विद्यार्थी एवं अन्य लोग सम्मिलित हुए।कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. हरेन्द्र कुमार सिंह, अधिष्ठाता, वाणिज्य संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि व्यवसाय का लक्ष्य है।

योग चित्त की स्थिर करता है: प्रो. हरि प्रसाद

स्वतंत्र भारत संवाददाता

गोरखनाथ की गोरखबानी भारत में सर्वत्र गूँजती है -प्रो. हरि प्रसाद

❖योग चित्त की स्थिरता प्रदान करता है

योग एवं व्यवसाय दोनों में सहकारिता होनी चाहिए : प्रो.हरेन्द्र

योग प्रशिक्षण का आयोजन

गोरखपुर। डीडीयू के के महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में 'योग एवं आजीविका' विषय पर चल रही सात दिवसीय कार्यशाला में शनिवार को योग प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता बीएचयू में वाणिज्य संकाय के अधिष्ठाता प्रो. हरेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि व्यवसाय का लक्ष्य है उचित लाभ अर्जित करना तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना।

शोधपीठ में योग प्रशिक्षण कार्यक्रम

GORAKHPUR (10 May): गोरखपुर यूनिवर्सिटी में महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा वीसी प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में चल रहे वर्कशॉप में ऑनलाइन माध्यम से योग और अध्यात्म के विषय पर जानकारी दी गई. वर्कशॉप में एनएसएस, यूजी, पीजी के स्टूडेंट्स और रिसर्च स्कॉलर भी शामिल हुए. कार्यक्रम की मुख्य वक्ता लखनऊ यूनिवर्सिटी की प्रो. अलका पांडेय रहीं.

क्रिया ही नहीं साधना भी योग : प्रो. पूनम

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि योग केवल क्रिया नहीं है, बल्कि एक साधना भी है। पूरे विश्व में योग को मान्यता दी गई है। 21 जून को विश्वविद्यालय में योग दिवस भव्य तरीके से मनाया जाएगा। इस बार विश्वविद्यालय की तरफ से योग दिवस का थीम योगा फॉर वुमन होगा। वह बुधवार को विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के तत्वावधान में आयोजित सात दिवसीय ग्रीष्मकालीन कार्यशाला योग एवं आजीविका के समापन अवसर पर बोल रहीं थीं। प्राणि विज्ञान के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार सिंह ने कहा कि मानव जीवन के तीन आयाम हैं। संचालन शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह ने किया। इस दौरान डीएसडब्ल्यू प्रो. अनुभूति दुबे, शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र, प्रो. हिमांशु पांडेय मौजूद रहे। संवाद

'योग एवं व्यवसाय में सहकारिता हो'

शोधपीठ में हुआ योग प्रशिक्षण

पंथ या संप्रदाय नहीं, महाविज्ञान है योग : प्रो. द्वारका

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में चल रही सात दिवसीय ग्रीष्मकालीन योग कार्यशाला के छठे दिन व्याख्यान का आयोजन किया गया. मुख्य वक्ता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के दर्शन शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. द्वारका नाथ ने कहा कि योग कोई पंथ या संप्रदाय नहीं है. योग महाविज्ञान है. इसके द्वारा जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है. उन्होंने कहा कि योग पूरे भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है. यह अनेक प्रक्रियाओं का संकलन है, जिसमें मन व शरीर में सामंजस्य स्थापित कर मोक्ष प्राप्त करते हैं. योग प्रशिक्षण डा. विनय कुमार मल्ल ने दिया. मुख्य अतिथि का स्वागत शोधपीठ के उप निदेशक डा. कुशल नाथ मिश्र ने किया. संचालन डा. सुनील कुमार और आभार ज्ञापन डा. सोनल सिंह ने किया. इस दौरान डा. मनोज द्विवेदी, हर्षवर्धन सिंह, डा. रणंजय सिंह, चिन्मयानंद मल्ल आदि मौजूद रहे.

योग कोई पंथ या संप्रदाय नहीं है, योग महाविज्ञान है: प्रो. द्वारका नाथ

☐ शोधपीठ में योग कार्यशाला के छठवें दिन आनलाईन व्याख्यान के साथ आयोजित हुआ योग प्रशिक्षण कार्यक्रम

स्वतंत्र चेतना गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टण्डन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय ग्रीष्मकालीन योग कार्यशाला विषय ह्योग एवं आजीविकाह्न मंगलवार को योग प्रशिक्षण के छठवे दिन भी प्रतिभागियों की काफी संख्या रही। योग प्रशिक्षण डा. विनय कुमार मल्ल के द्वारा दिया गया। योग प्रशिक्षण में लगभग 55 लोगो ने भाग लिया। जिसमे स्नातक, परास्नातक आदि के विद्यार्थी एवं अन्य लोग सम्मिलित हुए।कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. द्वारका नाथ, दर्शन विभाग रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि योग कोई पंथ या संप्रदाय नहीं है। योग महाविज्ञान है। योग के द्वारा जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। योग पूरे भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है । योग का जननी भारत है। योग अनेक प्रक्रियाओं का संकलन है। जिसमे मन व शरीर में सामंजस्य स्थापित कर मोक्ष प्राप्त करते है। योग को केवल एक्सरसाइज के रूप में नही लेना चाहिए। योग का संबंध शरीर, मन व आत्मा तीनों से है।उन्होंने योग पर गीता के व्याख्या पर भी विस्तार से चर्चा करते हुए कर्म योग पर प्रकाश डाला। इस आनलाइन व्याख्यान में डॉ. सुनील कुमार, शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल आदि उपस्थित रहे।

कर्म की कुशलता है योग: डॉ .प्रांगेश

■ गोरक्षनाथ शोधपीठ में योग कार्यशाला

■ ऑनलाइन व्याख्यान के साथ योग प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

द्वितीय जिला स्तरीय योगासन खेल प्रतियोगिता का शुभारम्भ :

योग कोई पंथ या संप्रदाय नहीं महाविज्ञान है

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में चल रहे सप्त दिवसीय योग कार्यशाला के छठवें दिन ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डीडीयू के दर्शन शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. द्वारका नाथ ने कहा कि योग कोई पंथ या संप्रदाय नहीं है। योग महाविज्ञान है। इससे जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। योग पूरे भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। यह अनेक प्रक्रियाओं का संकलन है। योग प्रशिक्षण डॉ. विनय कुमार मल्ल ने दिया। स्वागत शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र ने किया।

योग कोई पंथ या संप्रदाय नहीं : प्रो. द्वारका

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में चल रहे सप्त दिवसीय ग्रिष्मकालीन योग कार्यशाला के छठवें दिन ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता डीडीयू के दर्शन शास्त्र विभाग के प्रो. द्वारका नाथ ने कहा कि योग कोई पंथ या संप्रदाय नहीं है। योग महाविज्ञान है। इसके द्वारा जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि योग पूरे भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। यह अनेक प्रक्रियाओं का संकलन है। जिसमें मन व शरीर में सामंजस्य स्थापित कर मोक्ष प्राप्त करते हैं। योग प्रशिक्षण डॉ. विनय कुमार मल्ल ने दिया। संवाद

योग विद्या अनादि है: डॉ. प्रांगेश मिश्र

शोधपीठ में आनलाईन व्याख्यान के साथ आयोजित हुआ योग प्रशिक्षण कार्यक्रम

'प्रकृति एवं शरीर के सभी ऊर्जाओं का मूल है प्राण'

मीडिया कवरेज

कृष्ण बुद्ध और गोरखनाथ के बिना योग की कल्पना नहीं : प्रो. दीप नारायण

- डीडीयू में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न
- योग की नगरी है गोरखपुर: प्रो. पूनम टंडन
- योग से दूर हो सकती हैं मनोवैज्ञानिक समस्याएं : प्रो. ऋषिकान्त पांडेय

गोरखपुर(एसएनबी)। कृष्ण, बुद्ध एवं गोरखनाथ के बिना योग की कल्पना नहीं की जा सकती। गोरखनाथ के साधना मार्ग से अंतर्बोध किया जा सकता है। योग का हमारे जीवन पर कदम-कदम पर प्रभाव है। योग हमारे हर क्रिया में है और अब हर क्षेत्र में आ रहा है। योग स्वयं एवं समाज दोनों के लिए आवश्यक है।

उक्त बातें प्रो. दीप नारायण यादव, पूर्व प्रति कुलपति, नीलांबर पीताम्बर विश्वविद्यालय, झारखंड ने कहीं। वे योग दिवस के अवसर पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से दर्शनशास्त्र विभाग एवं महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के तत्वावधान में एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि हठयोग के प्रवर्तक गोरखनाथ जी हैं। गोरखपुर योग की नगरी है। हठयोग का यहां जन्म हुआ है। योग के द्वारा विद्वान एवं जनमानस में जागृति उत्पन्न कर गोरखनाथ जी के संदेश को सामान्यजन में प्रसारित करें। इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो. ऋषिकान्त पांडेय ने बतौर मुख्य वक्ता कहा कि योग के मनोवैज्ञानिक पहलू की चर्चा करते हुए कहा कि योग से मनोवैज्ञानिक एवं मानसिक समस्याएं दूर की जा सकती है।

इस संगोष्ठी के संयोजक गोरखपुर विश्वविद्यालय के डा. संजय कुमार राम, सहायक आचार्य, दर्शनशास्त्र विभाग ने अतिथियों का स्वागत किया।

कृष्ण, बुद्ध एवं गोरखनाथ के बिना योग की कल्पना असंभव

- योग के माध्यम से स्वयं एवं समाज का सशक्तिकरण कर अपना योगदान करें सुनिश्चित - प्रो. पूनम टंडन
- डीडीयू में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित योग सप्ताह का राष्ट्रीय संगोष्ठी से हुआ समापन

कर्म की कुशलता ही योग है : डॉ. प्रांगेश

शोधपीठ में कुलपति के अध्यक्षता के साथ सम्पन्न हुआ योग कार्यशाला

- विश्वविद्यालय के द्वारा आगामी योग दिवस का थीम होगा योगा फॉर वुमन प्रो. पूनम टण्डन
- जब तक वैचारिक शुद्धता नहीं होगी तब तक कोई किसी को योग नहीं सिखा सकता: प्रो.दिनेश

योग को बनाएं दैनिक जीवन का हिस्सा : पूनम टंडन

योग विद्या अनादि है डॉ : प्रांगेश

चित्त को स्थिरता देने का काम करता है योग

GORAKHPUR (12 May): गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरखनाथ शोधपीठ में योग पर वर्कशॉप हुआ. जिसमें योग प्रशिक्षण डा. विनय कुमार मल्ल ने पद्मासन, शीर्षासन, हलासन समेत जलनेति आदि का प्रशिक्षण दिया. कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र ने किया. कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी रहे. उन्होंने कहा कि योग बहुत व्यापक है. गोरखनाथ की गोरखबानी भारत में सर्वत्र गूंजती है. योग चित्त को स्थिरता प्रदान करता है.

योग का महत्व बताने को गोवि में होगा आयोजन

- अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को मनाने की विश्वविद्यालय ने बनाई योजना
- संबद्ध कालेज भी करेंगे योग से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन

साप्ताहिक योग कार्यक्रम के तीसरे दिन भी शोधपीठ में योगाभ्यास कराया गया

गोरखपुर,१७जून।दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में अंतर्राष्टीय योग दिवस 21 जून के उपलक्ष्य में साप्ताहिक योग कार्यक्रम के तीसरे दिन भी योगाभ्यास का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र जी के द्वारा हुआ। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 8 बजे महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में 5 से 15 वर्ष के आयु के बच्चों के लिए योग का प्रशिक्षण डॉ. विनय मल्ल के द्वारा दिया गया। विभिन्न स्कूलों के लगभग 20 बच्चों ने इस प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया। इन बच्चों ने योग के प्रति विशेष उत्साह दिखाया।

इसके बाद 10 बजे शोधपीठ में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए योगासन एवं प्राणायाम पर डॉ. प्रफुल्ल चंद द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में उच्च रक्तचाप से ग्रस्त रोगियों के लिए योगाभ्यास के तरीके सिखाए गए। इस कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, प्रो. अनुभूति दुबे द्वारा योग प्रशिक्षक सहित समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. संजय तिवारी, डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल तथा विद्यार्थी आदि जुड़े रहे।

पर्यावरण को अनुकूल बनाने हेतु प्रत्येक व्यक्ति करे पौधरोपण: प्रो. पूनम टंडन

विश्व पर्यावरण दिवस पर गोरखपुर विश्वविद्यालय में किया गया पौधरोपण

योग केवल क्रिया ही नहीं साधना भी : प्रो. पूनम टण्डन

- शोधपीठ डीडीयू मे सप्त दिवसीय योग कार्यशाला का समापन

गोरखपुर (एसएनबी)। दीदउ गोविवि स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में चल रहे ग्रीष्मकालीन कार्यशाला योग एवं आजीविका का बुधवार को सातवें एवं अंतिम दिन समापन हो गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विवि की कुलपति प्रो. पूनम टण्डन ने कहा कि योग केवल क्रिया नहीं है बल्कि एक साधना है। पूरे विश्व में योग को मान्यता दी गयी है। उन्होंने घोषणा किया कि आगामी 21 जून को विश्वविद्यालय में योग दिवस भव्य तरीके से मनाया जाएगा। इस बार विश्वविद्यालय के तरफ से योग दिवस का थीम योग फॉर वुमन होगा।

कार्यशाला के अंतिम दिन सुबह डा. विनय कुमार मल्ल के द्वारा योग प्रशिक्षण दिया गया। उसके बाद 10 बजे मुख्य वक्ता प्राणि विज्ञान के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार सिंह द्वारा योग एवं मानव जीवन विषय पर कहा कि मानव जीवन के तीन आयाम है शरीर, मन एवं आत्मा। इन तीनों से योग जुड़ा हुआ है। जब तक वैचारिक शुद्धता नहीं होगी तब तक कोई किसी को योग नहीं सिखा सकता। उन्होंने यम एवं नियम के महत्व पर विशेष जोर दिया।

इसके पूर्व कुलपति प्रो. टण्डन के द्वारा गुरु गोरक्षनाथ के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इसके बाद शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र द्वारा कार्यशाला का विवरण प्रस्तुत किया गया। योग के बच्चों द्वारा योगासनों की मनमोहक प्रस्तुति की गई। प्रो. अनुभूति दुबे ने बच्चों के प्रयास की सराहना की।

कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न शिक्षकों सहित प्रो. हिमांशु पांडेय, डॉ. विभाष मिश्र, डॉ. फूल चंद गुप्ता, डॉ. दुर्गेश पाल, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार सहित शोधार्थी एवं छात्र-छात्रायें उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन विनय मल्ल द्वारा किया गया। इस कार्यशाला के साथ ही कार्यशाला सहभागिता का प्रमाण पत्र एवं योगासन प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण भी किया गया। विवि के योग अध्ययन केंद्र के विद्यार्थी मोनिका रावत, सुनीता कुमारी एवं अविनाश कुमार मद्धेशिया ने पुरस्कार जीता।

कोई भी कसरत योग से बेहतर नहीं : प्रो. पूनम टंडन

जासं, गोरखपुर : योग दिवस के उपलक्ष्य में शनिवार को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से दर्शनशास्त्र विभाग एवं गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के संयुक्त तत्वावधान में गोरखपुर विश्वविद्यालय में शनिवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। बतौर अध्यक्ष संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि योग से बेहतर कोई कसरत नहीं। इसलिए इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं।

मुख्य अतिथि नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय, झारखंड के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. दीप नारायण यादव ने कहा कि कृष्ण, बुद्ध और गुरु गोरखनाथ के बिना योग की कल्पना नहीं की जा सकती।

इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो. ऋषिकान्त पांडेय विशिष्ट अतिथि रहे। इस अवसर पर प्रो. अजय शुक्ला, प्रो. सुनीता मुर्मू, प्रो. गौर हरि बेहरा, प्रो. दीपक प्रकाश त्यागी, डा. मनोज द्विवेदी, डा. संजय राम, डा. कुशल नाथ मिश्र, प्रयागराज विवि के प्रो. मनोज कुमार, डा. प्रवीण पटेल, डा. रमेश चंद, डा. संजीव विश्वकर्मा आदि मौजूद रहे।

कार्यशाला के पाँचवे दिन आनलाईन व्याख्यान के साथ आयोजित हुआ योग प्रशिक्षण कार्यक्रम

शरीर के सभी ऊर्जाओं का मूल है प्राण

योग कोई पंथ या संप्रदाय नहीं है, योग महाविज्ञान है : प्रो. द्वारका नाथ

कार्यशाला के छठवें दिन आनलाईन व्याख्यान व योग प्रशिक्षण संपन्न

योग को केवल एक्सरसाइज के रूप में नहीं लेना चाहिए : प्रो. द्वारका नाथ

कोई भी कसरत योग से बेहतर नहीं है : प्रो. पूनम

संगोष्ठी

क्रिया ही नहीं साधना भी है योग : प्रो. पूनम टंडन

मधुमेह को नियंत्रित रखने के लिए योगाभ्यास अपरिहार्य: डॉ. प्रफुल्ल

कुलपति
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर–273009 (उ.प्र.)
दूरभाष : +91-551-2201577
ई–मेल : vcddugu@gmail.com

कुलसचिव
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर–273009 (उ.प्र.)
दूरभाष : +91-551-2340363
ई–मेल : registrarddugu@gmail.com

उप–निदेशक
महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर–273009 (उ.प्र.)
दूरभाष : +91-9651834400
ई–मेल : mygsgsp@gmail.com

mygsgsp@gmail.com
https://whatsapp.com/channel/0029Va9xg0560eBmO8jUhe0n
https://www.facebook.com/mygsgsp/
https://www.facebook.com/profile.php?id=61551992553606
https://twitter.com/Gorakshpeeth
https://www.youtube.com/@mygsgsp
+91- 8299829806, 9415848512, 9935823171, 9415286885
http://www.ggnsp.ddugu.ac.in/

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University

A State University Established Under Uttar Pradesh State University Act 1973
(Accredited A++ by NAAC)